

GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA

Alabama • Alaska • Arizona • Arkansas • California
Colorado • Connecticut • Delaware



GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA — VOL. I

L'ORÉAL THROUGH GILLETTE · 00

अमेरिकी यात्रा का पहला पड़ाव: अलास्का, एरिज़ोना, अर्कांसस, कैलिफ़ोर्निया, कोलोराडो, कनेक्टिकट, डेलावेयर। शुरुआत होती है अध्याय शून्य से, वह आर्कटिक पूर्वकथा जो इस शृंखला के छहों भागों में साझा है।

अध्याय शून्य — साझा आरंभ

यह आरंभिक अध्याय *Women of the United States* के छहों भागों में साझा है। इसे यहाँ पूरा दिया गया है, और समेटकर रखा गया है ताकि शृंखला को बिना दोहराव के क्रम से पढ़ा जा सके।

अध्याय शून्य

यहाँ दुनिया कोई इलाका नहीं है: यह एक सीमा है। उत्तरी ध्रुव स्वागत नहीं करता, माफ़ नहीं करता, गलती की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। सफ़ेदी यहाँ एक निरपेक्ष सत्ता की तरह राज करती है, ख़ामोश और बिना स्मृति के। तापमान कोई मौसम का आँकड़ा नहीं है: यह एक शिकारी है। रात महीनों तक चलती है, विचारों को कुचल देती है, लोगों की रूपरेखा बिगाड़ देती है, उनकी इच्छाशक्ति निगल जाती है।

समुदाय गिने-चुने हैं, छोटे हैं, और बंद हैं। इनुइट, युपिक, आर्कटिक के लोग वहाँ रहते हैं जहाँ कोई भी रहना नहीं चुनेगा। यहाँ हर व्यक्ति समूह के अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। अगर तुम काम के नहीं हो, तो तुम बोझ बन जाते हो। और जो बोझ बन जाते हैं, वे ख़ामोशी में, बर्फ़ में, एक ऐसे वातावरण के तर्क में गुम हो जाते हैं जो कोई रियायत नहीं देता।

वैज्ञानिक अड्डे एक और तरह की ठंडक जोड़ते हैं: पदानुक्रमों की ठंडक। यहाँ औरत एक दुर्लभ उपस्थिति है, एक विसंगति, जिसे या तो ढलना होगा या हार माननी होगी।

इस जगह “गुम हो जाने” की अवधारणा ही नहीं है। बस सफ़ेदी है, जो सब कुछ मिटा देती है।

इनडिट और युपिक महिलाएँ

आर्कटिक की लड़की को लाड़-प्यार नहीं मिलता: उसे तैयार किया जाता है। वह जल्दी ही ठंड, अँधेरे और भूख को सहना सीख जाती है। उसे क़बीले के काम का बनना होता है, क्योंकि यहाँ पहचान निजी नहीं होती। वह कार्यात्मक होती है। औरत परिवार और समुदाय का बोझ उठाती है: भोजन, आग, बच्चे, खालें, देखभाल। अधिकारों की बात कोई नहीं करता। नाजुकी की बात कोई नहीं करता। अवसाद है, पर उसका कोई नाम नहीं। हिंसा है, पर उसका कोई गवाह नहीं।

वैज्ञानिक अड्डों की महिला

पढ़ी-लिखी, सक्षम, अनुशासन की आदी। वह शोधकर्ता, तकनीशियन और डॉक्टर बनकर आती है। जल्दी ही उसे पता चल जाता है कि उत्तरी ध्रुव डिग्रियों को नहीं पहचानता। यहाँ सिर्फ़ मानसिक मज़बूती गिनी जाती है। पुरुषों के पदानुक्रम उस पर हावी रहते हैं, और कमज़ोरी के किसी भी संकेत को कमज़ोरी ही समझा जाता है। यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ ताक़त काफ़ी नहीं होती: चरम आत्म-नियंत्रण चाहिए।

पश्चिमी “बाहरी” महिला

आज़ादी में पली-बढ़ी, वह यह मानकर आती है कि ठंड को जीत लेगी। पर यह जगह उसे तोड़ देती है: अकेलापन, छोटी-छोटी जगहें, अंतहीन ख़ामोशियाँ। अड्डे समुदाय नहीं हैं, वे यंत्र हैं। और पुरुषों के बनाए यंत्र के भीतर एक औरत को गुम न हो जाने के लिए लड़ना पड़ता है।

दुनिया के छोर तक की यात्रा

मेरा पड़ोसी अंतोनियो, जिसे सब नीनो कहते थे, बरसों से नॉर्थ केप की, आधी रात के सूरज की, बिना अँधेरे वाले महीनों की बातें करता था। यह एक सपना था जिसे वह जब में रखे फिरता था, किसी असंभव चीज़ की तरह। मई की एक सुबह मैंने उसकी घंटी बजाई और बस इतना कहा: “अपना सूटकेस तैयार करो।

मैं एक घंटे में लौटूँगा। हम 30 दिन में वापस आएँगे।” उसने मुझे हैरानी से, खुशी से देखा। उसकी पत्नी ने, चिंतित होकर, पूछा कि हमारी योजना क्या है। “एक सपने का पीछा,” मैंने जवाब दिया।

हम गाड़ी में बैठ गए। हमारी पत्नियाँ हमें ऐसे देख रही थीं जैसे हम पागल हों। पर यह यात्रा सच्ची थी। नीनो के पास पहले से ही सवालों की भरमार थी। “हम कहाँ जा रहे हैं? मुझे कितने पैसे साथ ले जाने चाहिए?” “आराम से,” मैंने उससे कहा। “हम 54 घंटे में वहाँ पहुँच जाएँगे। बस 5,000 किमी। हम नई रेंज रोवर में हैं। सफ़र का मज़ा लो।”

हर 300 किमी पर मुझे रुकना पड़ता था: वह मुझसे बारह साल बड़ा था, उसकी अपनी रफ़्तार थी। मेरे पास पानी और पेय थे; उसके पास कॉफ़ी और शरीर की ज़रूरतें। और हम जितना आगे बढ़ते गए, वह अपनी ज़िंदगी के बारे में उतना ही ज़्यादा बोलता गया। ऐसी बातें जो मैं कभी न जान पाता अगर वह अंतहीन सड़क न होती।

गाड़ी में अकेले दो आदमी, हमेशा औरतों की बातें करते हुए। वह सिर्फ़ अपनी पत्नी को जानता था। मैं हँसा। मैंने उसे तसल्ली दी: “हम सब ऐसे ही हैं।”

उसने मुझसे पूछा कि 60 घंटे गाड़ी चलाते हुए मैं होश में कैसे रह पाता हूँ। मैंने उसे रूस के बारे में बताया, जब 22 साल की उम्र में मैंने एक ऐसी औरत से मिलने के लिए 51 घंटे गाड़ी चलाई थी जिससे मैं कभी मिला नहीं था। “दूरियाँ सीमाएँ नहीं हैं,” मैंने उससे कहा, “वे बहाने हैं। मेरे पास कभी कोई बहाना नहीं रहा।”

सफ़ेदी में आगमन

हम नॉर्वे में दाखिल हुए। सड़क किनारे एक हॉस्टल। हम गाड़ी वहीं छोड़कर स्लेज से आगे बढ़ने वाले थे।

गाइड पूरी तरह ढकी हुई थी, अभेद्य। जब उसने अपना चश्मा उतारा, तब मुझे पता चला कि वह एक औरत है। एक नॉर्वेजियन औरत, ख़ामोश, सीधी, बर्फ़ जैसी। नीनो स्लेज के बीच में, वह आगे, और मैं अपने 190 सेमी के साथ पीछे, सबसे आखिर में।

अब भी दिन का उजाला था। मेरी घड़ी समय दिखा रही थी, पर यह नहीं बता रही थी कि रात है या सुबह। यह आधी रात का सूरज था। हम नॉर्थ केप पहुँच गए थे।

नीनो रो पड़ा। उसने मुझे गले लगा लिया। मैंने हँसते हुए उससे कहा, “संभलकर... लोग सोचेंगे कि हम गे हैं।” हम हँसे, पर हम दुनिया के छोर पर थे।

फिर आया पाला: -52°C ।

असली आर्कटिक में प्रवेश

वे हमें कपड़े बदलने के लिए एक धातु के कंटेनर में ले गए। बेहद भारी, गद्देदार सूट, उलझी हुई ज़िपों से बंद होने वाले।

गाइड का पैसा मैंने दिया। नीनो को कुछ आदमियों के साथ एक इग्लू में छोड़ दिया गया; मुझे दूसरे में एक परिवार के साथ: एक बूढ़ा आदमी, 70 से 80 के बीच, और 30 से 50 के बीच की तीन औरतें।

वह एक बंद दुनिया थी। सरल। क्रूर।

आदमी एक तरफ़ रहता था। औरतें काम की रफ़्तार बनाए रखती थीं। और शौचालय इग्लू से पाँच मीटर दूर एक टीला था: टट्टी ज़मीन छूने से पहले ही जम जाती थी। मेरा पहला पेशाब एक पीला आर्कटिक तारा बन गया। यह उत्तर था जो मुझे सलाम कर रहा था।

बीच की उम्र वाली औरत, माजी, थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी बोलती थी। बाक़ी सब इशारे थे, आँखें, हाथ। ठंड की भाषा।

जब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सूट कैसे इस्तेमाल करूँ, तो उसने, बिना सोचे, एक छिपी हुई ज़िप दिखाने के लिए मेरी जाँघों के बीच छुआ। न कोई बुरी नीयत थी, न कोई शर्म: बस काम। ज़िंदा रहना।

इग्लू में तीन दिन

वे खाना लाए। धुएँ में पकी मछली, कच्ची मछली, कॉड का कलेजा, व्हेल का पेट। और शार्क के गोले। कोई विकल्प नहीं था। कोई दूसरा रास्ता नहीं था। यह वही था जो प्रकृति देती है।

फिर मैंने पिया: एक लाल तरल। मुझे लगा शराब है। वह छाना हुआ, उबाला हुआ, मीठा किया हुआ व्हेल का खून था। मैंने उसे पी लिया। उसने मुझे ऐसी ताक़त दी जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। एक आदिम ऊर्जा। मुझे लगा कोकीन है। नहीं। यह उत्तर था जो शरीर में उतर रहा था।

औरतें मुझे देखती रहीं। बूढ़ा शिकार पर निकल गया। मैं आराम करता रहा और खून पीता रहा। तीन दिन बिना फ़ोन, इंटरनेट, कंप्यूटर के, बिना नीनो के। बस मैं और वे।

रात नहीं थी। बस रोशनी, आग, बर्फ़ और साँस।

तीनों औरतें सोने के लिए लेट गईं। मैं जगह ढूँढ़ने लगा। सबसे छोटी ने अपनी बाँह उठाई और मुझे पास आने का इशारा किया। वे ठहाका मारकर हँस पड़ीं। मुझे समझ नहीं आया। उन्होंने कहा कि मैं उनका “क्रिसमस” हूँ।

यह कहने का एक तरीका कि मुझे अपना लिया गया था।

मैंने धन्यवाद कहने के लिए उन्हें कुछ पैसे देने की कोशिश की। उन्होंने मना कर दिया। उन्हें बस एक आलिंगन चाहिए था। और कैलाब्रियाई में कुछ शब्द, ताकि वे खुद को और करीब महसूस कर सकें।

वहाँ मैंने सच्चे उपहारों का मूल्य समझा: वे जिन्हें न खरीदा जा सकता है, न बेचा।

गाइड की विदाई

तीन दिन बाद गाइड आई। उसने तीनों औरतों से एक घंटे तक बात की। मैं बाहर था। मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कह रही थीं। यह मेरा मामला नहीं था। यह उनकी भाषा थी, उनकी दुनिया, उनका क़ानून।

कंटेनर में, जब मैं कपड़े उतार रहा था, गाइड अंदर आई। जिज्ञासु। सीधी। उत्तरी। उसने मुझे कसकर गले लगाया। उसने मुझे चूमा। उसकी त्वचा दूध जैसी सफ़ेद थी। उसकी आँखें अगस्त के आसमान जैसी नीली थीं।

उसने मुझसे कहा कि मैं उसे अपने साथ ले चलूँ। उस दुनिया से निकलने के लिए वह कुछ भी कर गुज़रती।

मैं आदर से मुस्कुराया। मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मुझे ऐसा करना भी नहीं चाहिए था।

मैंने उसके पास सिर्फ एक वादा छोड़ा: "अगर तुम्हें कुछ भी चाहिए, मुझे एक चिट्ठी लिखना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" उसने पैसे भी लेने से मना कर दिया। वह एक सुंदर औरत थी, पर अकेली। ऐसा अकेलापन जो दूर से दिखाई नहीं देता। ऐसा अकेलापन जिसे ठंड माफ़ नहीं करती।

घर वापसी

हम नीनो को लेने गए। वह रोमांचित था। वह वापस जाना नहीं चाहता था। पर मेरी उसकी पत्नी से मुलाकात तय थी।

उसने सबको अपने तीन दिनों के बारे में बताया। मैं चुप रहा। मैंने उस आदमी से कभी कुछ साझा नहीं किया। सिर्फ कागज़ से।

और इस तरह, जब नीनो अपनी दुनिया में लौट रहा था, मैं पहले ही दूसरी दुनिया की ओर निकल चुका था। एक और मंज़िल। एक और मुलाकात।

स्वागत है।

उपसंहार

उत्तर तुम्हें ले नहीं जाता: वह तुम्हें बदल देता है। और वह तुम्हें कभी

पूरा वापस नहीं लौटाता। मर्द उत्तरी ध्रुव पर रोशनी, खामोशी, तस्वीरें, सपने ढूँढने आते हैं। औरतें ज़िंदा रहने के लिए रुकती हैं।

मर्द बताते हैं कि उन्होंने क्या देखा। औरतें उस पर चुप रहती हैं जो उन्होंने जिया।

मर्द लौट जाते हैं। औरतें रह जाती हैं। वे ठंड में रह जाती हैं, बर्फ़ के घरों में, अनसुनी खामोशियों में। वे उन समुदायों को सहारा देने के लिए रह जाती हैं जो उनका गुणगान नहीं करते। वे बच्चों, बूढ़ों, अजनबियों की रक्षा के लिए रह जाती हैं। वे अदृश्य रह जाती हैं।

मैं वहाँ से सिर्फ एक स्मृति लेकर आया: एक सुंदर, बेहद सुंदर औरत, पर अकेली। रोमानी अर्थ में नहीं। मानवीय अर्थ में। त्रासद अर्थ में।

चिंतन

उत्तर शरीर को नहीं मारता। वह उपस्थिति को मारता है। और जो बचता है वह सफ़ेदी है: एक ऐसी जगह जहाँ औरतें एक ही समय में जीती भी हैं और गुम भी हो जाती हैं।

इसीलिए मैं लिखता हूँ। क्योंकि चरम जगहें अपनी कहानी खुद नहीं सुनातीं। और जो उनसे होकर गुज़रते हैं, वे चुप रहने की विलासिता नहीं उठा सकते।

मैं नहीं। मैं नहीं। मेरी धरती ने मुझे जन्म दिया, और बाक़ी दुनिया मेरा स्वागत किसी मेहमान की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक सदस्य की तरह करती है।

उत्तर की निरपेक्ष सफ़ेदी से मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की निरपेक्ष उलझन में उतर आया।

संयुक्त राज्य अमेरिका

असंभव काम

अठारह साल एक अमेरिकी कंपनी के लिए काम करना तुम्हें वह देता है जो दुनिया की कोई और कंपनी नहीं दे सकती: एक कार्य-संस्कृति, प्रक्रियाएँ, एक स्पष्ट मिशन, और मूल्यों की एक व्यवस्था जो सिद्धांत नहीं है—वह रोज़ का अभ्यास है। वे उन्हें तुम्हें समझाते नहीं; वे उन्हें तुम्हारे भीतर गढ़ देते हैं। और वे यह तुम्हारी इजाज़त माँगे बिना करते हैं।

मैं न्यूयॉर्क के दफ़्तर में था जब मुझे एक ऐसा काम पेश किया गया जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। पदोन्नति नहीं। तबादला नहीं। एक प्रयोग।

एक गोपनीय कार्यक्रम, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर मानवीय संबंधों के एक मॉडल को परखने के लिए बनाया गया था। उन्होंने मैनेजर, मनोवैज्ञानिक या प्रशिक्षक नहीं चुने थे। उन्होंने असली दुनिया के एक खास तरह के अनुभव वाले लोगों को चुना था। और मेरा नाम सामने आया—हालाँकि मैं अठारह साल से सेल्स में था। वे पद को नहीं देख रहे थे: वे दिमाग़ को देख रहे थे।

परीक्षा समझाने में सरल थी और पूरी करने में बेहद कठिन:

एक साल में अमेरिका के 50 राज्यों का दौरा करना, शहर खुद चुनते हुए और हर एक में कम से कम एक हफ़्ता रुकते हुए।

आखिरी दो हफ़्ते ज़बरदस्ती की छुट्टी होंगे। सारा खर्च वे उठाएँगे। मुझे बस जीना था, देखना था, समझना था, और हर सोमवार एक रिपोर्ट भेजनी थी। एक मानवीय, सूखा, सटीक ब्योरा।

मैंने अनुबंध पर दस्तखत कर दिए। मैंने घर पर ख़बर कर दी। उन्होंने कुछ नहीं पूछा। वे बस यह जानना चाहते थे कि महीने का राशन पहुँचा या नहीं। मैं अमेरिका में एक साल का सामना करने जा रहा था। वे, हमेशा की तरह, अगले महीने का सामना कर रहे थे।

एहतियात के तौर पर, मेरी तनख़्वाह सीधे इटली में मेरे बैंक खाते में जमा की जाती थी। यह मुझे से यह कहने का एक शिष्ट तरीक़ा था: “कोई बेवकूफी मत करना। जो तुम्हारे पास है उसी से जीना। देखते हैं तुम असल में कौन हो।”

सिर्फ़ पंद्रह साल बाद ही मुझे अपनी मूल रिपोर्टों, विश्लेषणों और उस सामग्री तक पहुँच मिली जो उन्होंने मेरे बारे में इकट्ठा की थी। यह किताब वहीं से जन्मी। मुझे इसे प्रकाशित करने की मंजूरी मिल गई, एक शर्त पर: उस कंपनी का नाम कभी न लेना जिसने इसे करवाया था।

इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। यह कहानी लोगो के बारे में नहीं है। यह एक ऐसे देश में एक आदमी के बारे में है जिसे खुद जिए बिना समझना असंभव है।

क्या मैं सबसे दूर के बिंदु से शुरू करूँ?

तार्किक चुनाव था हाशिये से शुरू करना, केंद्र से नहीं। दो सरल कारणों से:

1. मैं प्रयोग से ताज़ा-ताज़ा निकला था: पूरी स्पष्टता, अधिकतम ध्यान।
2. छोर से शुरू करके मैं रास्ता सुधार सकता था और यात्रा को साफ़-सुथरे ढंग से ख़त्म कर सकता था।

मुझे बोस्टन या शिकागो से शुरू करने की ज़रूरत नहीं थी। मुझे एक सरहद से शुरू करना था। एक ऐसी जगह से जो सिर्फ़ कागज़ पर अमेरिका थी।

मैंने जूनो चुना, अलास्का की राजधानी। कटा हुआ। सिर्फ़ नाव या हवाई जहाज़ से पहुँचने लायक़। एक ऐसा शहर जो किसी का नहीं है। शुरुआत के लिए एकदम सही जगह।

संसाधनों का सही उपयोग

निकलने से पहले मैंने वह किया जिसका एक अमेरिकी सबसे पहले सम्मान करता है: मैंने खुद को एक पेशेवर की तरह संगठित किया, किसी पर्यटक की तरह नहीं।

मैंने तीन सबसे लोकप्रिय एयरलाइनों को फ़ोन किया, जिनके घरेलू नेटवर्क सबसे बड़े थे। एक घंटे से भी कम में मैंने 60% छूट पर पचास घरेलू उड़ानों की एक टिकट-पुस्तिका ख़रीद ली।

कोई समय-सीमा नहीं। दिनों की कोई सीमा नहीं। कोई पाबंदी नहीं। बस एक शर्त: उन्हें एक साल के भीतर इस्तेमाल करना।

मैंने होटल चेनों, उबर टैक्सियों और कार किराये की कंपनियों के साथ भी यही किया, और फिर पड़ावों का, तरीक़ों का एक ठीक-ठाक कार्यक्रम बनाया, पर समय का नहीं।

मैं तैयार था।

यह मेरी पहली असली कामयाबी थी। पहला संकेत कि मुझे चलना-फिरना आता था। अमेरिका उन्हें इनाम देता है जो कुछ करते हैं, उन्हें नहीं जो इंतज़ार करते हैं।

जब कंपनी ने यह लेन-देन देखा, तो उसने वही किया जो एक अमेरिकी संस्कृति हमेशा करती है: उसने भरोसेमंदी जाँची।

क्या मैं लगातार आवाजाही का एक साल सँभाल सकता था? क्या मैं अप्रत्याशित घटनाओं, दूरियों और आपात स्थितियों से निपट सकता था? क्या मैं आत्मनिर्भर था?

इसीलिए, निकलने से पहले, मैंने एक और निर्णायक बात तय की:

मैंने यह सुनिश्चित किया कि मेरे क्रेडिट कार्ड पर हर महीने कम से कम \$100,000 की क्रेडिट सीमा हो।

यह खर्च करने के लिए नहीं था। यह दिखाने के लिए था कि हम उन्हें सँभाल सकते हैं। अमेरिकी ऐसे ही सोचते हैं: अगर तुम्हारे पास स्वायत्तता नहीं है, तो तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है। और अगर तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है, तो तुम्हारा मूल्यांकन नहीं हो सकता।

उस पल से कार्यक्रम अब एक काम नहीं रहा। वह एक मिशन बन गया।

और अब हम सचमुच यात्रा करते हैं

अलास्का सिर्फ भूगोल के हिसाब से संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा है। यह एक और ही दुनिया है।

यह वह जगह है जहाँ औरतें बिना कोई निशान छोड़े गुम हो जाती हैं। जहाँ कोई शिकायत कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचती। जहाँ शहर एक जंगली महाद्वीप के बीच सभ्यता के टापू भर हैं।

जूनो मेरी पहली परीक्षा थी: एक राजधानी जिसे बाक़ी देश से कोई सड़क नहीं जोड़ती। अमेरिका का एक टुकड़ा जो अमेरिका जैसा नहीं लगता।

यहाँ मुझे कुछ समझ आने लगा: यह यात्रा भौगोलिक नहीं होगी। यह मानवीय होगी।

खंड 1 (भाग I)

अलाबामा – अलास्का – एरिज़ोना – अर्कांसस – कैलिफ़ोर्निया – कोलोराडो – कनेक्टिकट – डेलावेयर – फ़्लोरिडा – जॉर्जिया

खंड 2 (भाग II)

हवाई – आइडाहो – इलिनॉय – इंडियाना – आयोवा – कैनसस – केंटकी – लुइज़ियाना – मेन – मैरीलैंड

खंड 3 (भाग III)

मैसाचुसेट्स – मिशिगन – मिनेसोटा – मिसिसिपी – मिसौरी – मोंटाना – नेब्रास्का
– नेवाडा – न्यू हैम्पशायर – न्यू जर्सी – न्यू मेक्सिको

खंड 4 (भाग IV)

न्यूयॉर्क – वॉशिंगटन

खंड 5 (भाग V)

नॉर्थ कैरोलाइना – नॉर्थ डकोटा – ओहायो – ओक्लाहोमा – ओरेगन –
पेंसिल्वेनिया – रोड आइलैंड – साउथ कैरोलाइना

खंड 6 (भाग VI)

साउथ डकोटा – टेनेसी – टेक्सस – यूटा – वरमॉन्ट – वर्जीनिया – वेस्ट वर्जीनिया
– विस्कॉन्सिन – वायोमिंग अलाबामा अलाबामा सिर्फ संयुक्त राज्य अमेरिका का
दक्षिण नहीं है। यह इतिहास का एक टुकड़ा है जो कभी ठंडा नहीं पड़ता। यहाँ
गुलामी कोई अध्याय नहीं है: यह एक साया है। अलगाव कोई स्मृति नहीं है: यह
एक ज़ख्म का निशान है। आस्था कोई सांत्वना नहीं है: यह नियंत्रण है। इस राज्य
में हर चीज़ का बोझ है। गर्मी का बोझ है। परिवार का बोझ है। परंपरा का बोझ
किसी भी चीज़ से ज़्यादा है। धर्म गले के चारों ओर बेल्ट की तरह कस जाता है।
समुदाय देखते हैं, परखते हैं, याद रखते हैं। कुछ भी सचमुच भुलाया नहीं जाता।
कुछ भी सचमुच माफ़ नहीं किया जाता। और इस सबके बीच हैं औरतें। औरतें
जो पूरे-पूरे घर चलाती हैं और उनका नाम तक नहीं लिया जाता। औरतें जो तीन
शिफ्टों में काम करती हैं और बच्चों को तैयार करने के लिए भोर में उठती हैं।
औरतें जो रविवार को चर्च में प्रार्थना करती हैं और सोमवार को चुपचाप काँपती
हैं। औरतें जिनके पति काम से थककर चूर हैं या जिनके मर्द कुछ नहीं करते।
औरतें जो एक ही दिन में माँ, बेटी, दादी-नानी और जीवन के खंभे बन जाती हैं।

अलाबामा की औरतों की ज़िंदगी एक लगातार झूलता पेंडुलम है:

– कुछ हैं जो शादी करने के लिए जल्दी घर छोड़ देती हैं, भाग जाती हैं, बहुत
जल्दी बड़ी हो जाती हैं

– कुछ हैं जो तलाक़ की वजह से, छूटी नौकरी की वजह से, दबा दी गई हिंसा की वजह से वापस लौट आती हैं

वे गढ़ी हुई औरतें हैं। नाज़ुक नहीं। बागी नहीं। पीड़ित नहीं।

गढ़ी हुई।

उनका प्रतिरोध ख़ामोश है, पर निरपेक्ष। यह उनकी ताक़त है जो बिखर नहीं सकतीं क्योंकि उन्हें कोई उठाने वाला नहीं।

डाइनर की वेट्रेस

कॉफ़ी और तली हुई चीज़ों की गंध आ रही थी। और मुझे फ़ौरन एक नियम याद आया जो हर जगह लागू होता है: कोई जगह जितनी ग़रीब लगे, खाना उतना ही बढ़िया। ये सच्चाइयाँ मैंने सड़क पर सीखीं। और इन्होंने मुझे कभी धोखा नहीं दिया।

उसका नाम कैरल था।

सुनहरे बाल—शायद कुदरती, शायद नहीं—घिसे हुए हाथ, फुर्तीली मुस्कान, बुझी हुई आँखें। वह सबको उसी थकी हुई शालीनता से परोसती थी। और कोई उसे सचमुच देखता नहीं था।

मैं देखता हूँ। जब मैं किसी काम करती परी को देखता हूँ, तो उसे नमस्ते कहे और मुस्कान दिए बिना रह नहीं पाता। यह कम से कम इतना तो मैं कर ही सकता हूँ। वह मुझे मेज़ तक ले गई। “क्या खाओगे?” उसने पूछा। अगर हम इटली में होते, तो मैं अपना सच कह देता। मैंने फिर भी कोशिश की:

“मुझे तुम चाहिए।”

उसने मुझे भावहीन नज़रों से देखा। या न समझने का नाटक करते हुए—उन कुछ स्थानीय लोगों की तरह जो सब कुछ समझकर भी कहते हैं कि कुछ नहीं समझा। दोहराना बेकार था। फिर मैंने ऑर्डर दिया:

हॉट डॉग। बीयर। और एक काली अमेरिकी कॉफ़ी, मिठाई के साथ।

मैंने उसकी जिज्ञासा जगा दी थी। मैं उसकी हरकतों से देख सकता था। वह कुछ मिनट बाद लौटी: "मेरी शिफ्ट दस मिनट में खत्म होती है... क्या मैं बैठ सकती हूँ?"

मैंने हामी भरी।

वह झुकी हुई पीठ के साथ बैठ गई, उस इंसान की तरह जो कभी आराम नहीं करता। उसने मेरी आँखों में देखा और बिना किसी नाटक के कहा:

"मैं यह काम करने को मजबूर हूँ। मेरे पति इराक में मारे गए। मेरे न बच्चे हैं, न रिश्तेदार। और सड़क... वह मेरे लिए कोई काम नहीं है।"

मैंने जवाब नहीं दिया। कभी-कभी शब्द अपमान होता है। मैंने उसका हाथ थामा। एक मज़बूत पकड़। एक सूखा, साफ़ इशारा।

और उसकी हथेली में मैंने सौ डॉलर छोड़ दिए।

मैं उठा। मैं बाहर निकल गया। पीछे मुड़कर देखे बिना। पर शीशे के पार मैंने उसे देखा। वह उछलकर खड़ी हो गई थी, जैसे हैरान हो, जैसे आहत हो, जैसे कृतज्ञ हो। वह कुछ हकलाकर कह रही थी जो बाहर तक नहीं आ रहा था।

और वहीं मुझे कैरल की ज़िंदगी का सच समझ आया:

वह कभी बैठती नहीं।

गॉस्पेल गायिका

वह किसी भी और रविवार जैसा एक रविवार था। मुझे अपने आध्यात्मिक मन को छूने की ज़रूरत महसूस हुई, और अलाबामा में इसका मतलब है चर्च जाना। वहाँ आस्था धर्म नहीं है: वह एक मंच है।

पादरी अपना प्रवचन खत्म कर रहे थे जब मैं मुख्य दरवाज़े से अंदर आया, जो गर्मी की वजह से पूरा खुला छोड़ा गया था। मैंने बग़ल का दरवाज़ा नहीं चुना। मैं चाहता था कि उस छोटे से समुदाय में मेरा आना सबकी नज़र में आए।

उन्होंने मुझे देखा और ऊँची आवाज़ में कहा, "स्वागत है, अजनबी।" मैंने जवाब दिया, "आपका भी स्वागत है।"

मैं बैठ गया। ऑर्गन गूँजने लगा: एक ऊँचा, जाना-पहचाना सुर, वह "अमेरिकी भूत" जो मुझे अरीथा फ्रैंकलिन की याद दिलाता है तब भी जब कोई मशहूर नहीं होता। और फिर वह अंदर आई।

उसकी आवाज़ गाती नहीं थी: वह आज़ाद होकर फूट पड़ती थी।

वह अफ्रीकी अमेरिकी थी, उस तरह की नहीं जो नज़र से छूट जाती है, बल्कि उस तरह की जिसे किस्मत सिर्फ़ एक बार तुम्हारे सामने रखती है, यह याद दिलाने के लिए कि जब ज़िंदगी किसी इंसान को कुचलती है तो वह क्या कर सकता है। उसकी आवाज़ विशाल थी। उसकी ज़िंदगी छोटी थी। वह साँस लेने के लिए रविवार को गाती थी। ज़िंदा रहने के लिए पूरे हफ़्ते चुप रहती थी।

जब सब ख़त्म हुआ, लोग जाने के लिए उठ खड़े हुए, जैसे कुछ हुआ ही न हो। मैं पास गया। वह हैरान थी: वहाँ कोई गॉस्पेल गायिका को धन्यवाद नहीं देता था। यह हवा को धन्यवाद देने जैसा है: सब उसे मानकर चलते हैं।

मैंने उससे हाथ मिलाया। मैंने एक छोटा कटोरा दिया, उस तरह का जो कुलीन औरतों के लिए रखा जाता है। क्योंकि उसके पास सब कुछ था, या लगभग सब कुछ। उसे बस मेरी ज़रूरत थी। और एक मिनट के लिए, मैं वहाँ था।

"आप कौन हैं?" उसने पूछा। मैंने जवाब दिया, "मैं उन फ़रिश्तों में से एक हूँ जो सिर्फ़ तुम्हारे लिए छत से उतरे हैं। और तुम्हारी वजह से आज मैं इंसान बना रहता हूँ। मैं कभी वापस नहीं जा रहा।"

वह मुस्कुराई। अच्छा संकेत। मैं कुछ बेच नहीं रहा था। मैं कुछ ढूँढ़ नहीं रहा था। मैं सोख रहा था। हमेशा की तरह।

उसकी जिज्ञासा एक सवाल बनकर फूटने ही वाली थी, पर मैं पहले ही बाहर की ओर बढ़ रहा था। और तभी यह हुआ।

उसकी आवाज़ ने मुझे पुकारा: "सर! सर! अजनबी!" एक ऊँची पुकार, हवा से भरी और किसी ऐसी चीज़ से जो दर्द नहीं थी।

मैं मुड़ा नहीं। मैं मदद की पुकार और "क्यों" की पुकार में फ़र्क़ कर सकता हूँ। वह एक "क्यों" था। और उसे जवाब की ज़रूरत नहीं थी। मेरी भेंट उसके पैरों के

पास पड़ी रही। वह मेरा निशान था। अपनी बाक़ी ज़िंदगी के बारे में, जिसके लिए कभी किसी ने ताली नहीं बजाई, वह खुद लिखेगी।

कॉलेज की छात्रा

वह किताबों और महीन भेदभाव के बीच जीती थी। मैं कैंपस के बाहर बैठा था, एक पुरानी सहकर्मी का इंतज़ार कर रहा था जो वहाँ प्रोफ़ेसर बन गई थी। कैंपस इधर-उधर दौड़ते, हँसते, यह जताते बच्चों से भरा था कि उन्हें कोई नहीं देख रहा। वह नहीं। वह देख रही थी।

जब मेरी पुरानी सहकर्मी आई, उसने मुझे कसकर गले लगाया। छात्रा ने यह दृश्य देखा। उसने नज़र नहीं फेरी। और जब मैं गले लगने का जवाब दे रहा था, मैंने उसे देखा। सिर्फ़ उसे।

प्रोफ़ेसर को जल्दी में दूसरे कामों के लिए जाना पड़ा। उसने एक झटपट अलविदा और पुरानी यादों वाले अंदाज़ के साथ मुझे ऑगन के बीच छोड़ दिया। मैं फ़व्वारे के किनारे, छात्रा के बग़ल में जाकर बैठ गया। वह मुस्कुराई। उन मुस्कानों में से एक जो न न्योता होती है, न बचाव: वे सच होती हैं।

“तुम्हारे सपने क्या हैं?” मैंने उससे पूछा। “तुम जवान हो, होशियार हो... और बेहद ख़ूबसूरत।”

वह शरमाई नहीं। वह इतराई नहीं। उसने रूखेपन से जवाब दिया, उस इंसान की तरह जिसने हक़ीक़त के साथ जीना सीख लिया है:

“मेरा सपना है दक्षिण से भाग निकलना।

पर दक्षिण हर जगह मेरा पीछा करता है।”

मैंने सिर हिलाया। “जानती हो मैं कहाँ से हूँ?” उसने सिर हिलाकर मना किया। “दक्षिणी इटली से।” वह एक पल रुका। फिर वह हँसा। एक छोटी-सी हँसी, उस तरह की जो बोझ में एक खिड़की खोल देती है।

हमने कम बात की। पर वह काफ़ी थी।

“हम पहचान से, अतीत से और उम्मीदों से जूझने के लिए पैदा हुए हैं,” मैंने उससे कहा। “हम हमेशा दूसरों से बदलने को कहते हैं, पर सच्चा बदलाव हमारे भीतर

से शुरू होता है।”

वह जवान था। पर जो बोझ वह ढो रहा था, वह जवान नहीं था। और वह उसे गरिमा के साथ ढो रहा था।

जाने से पहले मैं उसके पास कुछ ऐसा छोड़ना चाहता था जो न भाषण हो, न वादा। बस सच।

“याद रखना, प्रिय:

दक्षिण उत्तर के लिए वही है जो औरत मर्द के लिए है।”

उसने मुझे देखा। वह समझ गई। और कुछ नहीं चाहिए था।

मैं उठ खड़ा हुआ। “अलविदा। और शुभकामनाएँ।”

उसने जवाब नहीं दिया। वह बस मुस्कुराई। और उस मुस्कान में पूरे कैपस से ज्यादा भविष्य था।

आधुनिक बागान की महिला

मेरी राज्य वाणिज्य मंडल के अध्यक्ष से मुलाकात तय थी। मैं पहले इटली में पार्श्व रह चुका था, और कुछ संस्थागत तौर-तरीके, जैसे ही तुम उनसे दोबारा गुजरते हो, फ़ौरन याद आ जाते हैं। वह लंबा, दुबला और सलीकेदार था। एक सोने की घड़ी। पुरानी दौलत की एक हल्की-सी खुशबू। उस तरह की जिसका दिखावा नहीं किया जाता: उसे पहना जाता है। क्योंकि यहाँ के अमीरों से पैसे की गंध नहीं आती। उनसे हर चीज़ की गंध आती है।

उसे अपने राज्य पर गर्व था। ज़रूरत से ज्यादा गर्व। इस बात का पक्का यक़ीन कि अलाबामा की अर्थव्यवस्था पूरे देश को थामे हुए है, उसने यह साबित करने के लिए मुझे एक कपास के बागान ले जाने का फ़ैसला किया। पहले ज़मीन। फिर प्रसंस्करण। फिर आधुनिक कृषि उद्योग, वह जिसने जंजीरें तो हटा दीं पर वही रफ़्तार छोड़ दी।

और वहीं मैंने उसे देखा।

धूप उसकी पीठ जला रही थी। उसकी हरकतें बेहद धीमी थीं, सटीक, बिना किसी शिकायत के। वह भरी जवानी के बाद की उम्र की एक औरत थी, ऐसे चेहरे वाली जो थकान से तराशा हुआ लगता था। कंधों पर उसका परिवार। उसकी त्वचा पर लकीरें थीं। उसकी आँखें सख्त थीं। उस इंसान की रफ्तार जो खुद को कभी, कभी भी, गलती की इजाज़त नहीं देता।

मैंने अध्यक्ष से पूछा कि क्या मैं मज़दूरों से बात कर सकता हूँ। मैं "बेहतर समझना" चाहता था, मैंने कहा। एक बहाना। मैं बस उससे बात करना चाहता था।

मैं पास गया। उसने घुटने टेककर मेरा हाथ चूम लिया। एक प्राचीन इशारा, बेजगह, बेवक़्त। मैंने उसे फ़ौरन रोक दिया।

"खड़ी हो जाओ," मैंने उससे कहा। "मैं कोई बिशप नहीं हूँ। न कोई पोप। मैं बस तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ।"

उसने जवाब नहीं दिया। उसने मुझे मुश्किल से देखा, जैसे वे देखते हैं जो सचमुच देखने का जोखिम नहीं उठा सकते। मैं कुछ पल चुप रहा। फिर मैं चला गया। पर बात ख़त्म नहीं हुई थी।

अगले दिन मैं अकेला लौटा। मैं उसे फिर से देखना चाहता था, अपने चारों ओर के राजनीतिक तमाशे के बिना।

मैंने मज़दूरों के बाहर आने का इंतज़ार किया। जब उसने मुझे देखा, उसने नज़रें झुका लीं। संकोच। आदर। और बोलने की एक दबी हुई इच्छा।

मैंने उसे एक धीमे इशारे से रोका, बिना कुछ थोपे। वह दक्षिण की छिपी हुई निरंतरता का चेहरा थी: वह प्राचीन मेहनत जो कभी मिटाई नहीं गई। बस बेहतर ढंग से छिपा दी गई।

मैंने उसका हाथ थामा। मैंने उसे पाद्रे पियो की एक छोटी-सी तस्वीर दी जो मैं हमेशा अपने साथ रखता हूँ। उसके पीछे मैंने लिखा था:

"दर्द बीत जाने से भुलाया नहीं जाता।"

वह तभी भुलाया जाता है जब तुम माफ़ कर देते हो।"

मैंने और कुछ नहीं कहा। ज़रूरत नहीं थी। उसने एक छोटे-से इशारे से सिर हिलाया, दूसरों को अदृश्य। पर मेरे लिए, वही सब कुछ था।

उपसंहार – अलाबामा

अलाबामा एक राज्य नहीं है: यह एक फ़ैसला है। एक ऐसी जगह जहाँ अतीत बीतता नहीं और वर्तमान इजाज़त नहीं माँगता। सब कुछ अब भी दो पंक्तियों में लिखा है: कौन खड़ा रहता है और कौन गिरता है। और हमेशा, जो खड़ी रहती है वह एक औरत होती है।

मैंने चार अलग-अलग चेहरे देखे पर एक ही सच: वह वेट्रेस जो कभी बैठती नहीं, वह गॉस्पेल गायिका जो साँस लेने के लिए गाती है, वह छात्रा जो उस दक्षिण से भागने का सपना देखती है जो उसका पीछा करता है, नए बागानों की वह मज़दूर, एक प्राचीन मेहनत की वारिस। चार कहानियाँ। एक ही जड़। एक ही ख़ामोश लड़ाई।

अलाबामा में औरत एक ऐसी आस्था के भीतर जीती है जो रक्षा भी करती है और सज़ा भी देती है, एक ऐसे परिवार के भीतर जो सहारा भी देता है और दम भी घोंटता है, एक ऐसे समुदाय के भीतर जो देखता भी है और परखता भी है। फिर भी वह डटी रहती है। वह हार नहीं मानती। वह टूटती नहीं। वह अपनी सफ़ाई नहीं देती।

मर्द अपने दक्षिण को गर्व का स्रोत बताते हैं। औरतें उसे एक परीक्षा की तरह जीती हैं।

चिंतन – अलाबामा

सच सीधा है: जहाँ पुरुष नाम दिखाता है, वहाँ दुनिया पर राज औरत करती है।

अलाबामा ने मुझे सिखाया कि कुछ ज़िंदगियों को चीखने के लिए आवाज़ की ज़रूरत नहीं होती। उन्हें कोई चाहिए जो सुने। और मैंने, एक बार फिर, वही किया जो मुझे आता है: गुज़रना, देखना, समझना, और फिर बिना खलल डाले चले जाना।

क्योंकि अमेरिकी दक्षिण का, ग्लोबल साउथ की तरह, एक नियम है जो सदियों से सच साबित होता आया है: जो वहाँ रहते हैं, वे नहीं बदलते। जो उन्हें देखते हैं,

वे बदल जाते हैं।

मैंने उसे देखा। और मैं वैसा नहीं रहूँगा जैसा था।

अलास्का

अलास्का कोई राज्य नहीं है: यह एक जीवित सरहद है। एक महाद्वीप जितना बड़ा इलाका, जहाँ इंसान मेहमान है और फ़ैसला प्रकृति करती है। ऐसे शहर हैं जो सिर्फ़ हवाई रास्ते से जुड़े हैं। ऐसे गाँव जिन्हें महीने में एक बार डॉक्टर दिखता है। ऐसे घर जहाँ बिजली विलासिता है और गर्म पानी विशेषाधिकार। यहाँ ठंड मौसम नहीं है: वह एक किरदार है। वह लोगों को गढ़ती है, आदतों को ढालती है, चुप्पी थोपती है। ज़िंदगी असंभव दूरियों से, कड़ी मेहनत से, और उस अकेलेपन से बनी है जो गहरे तक खोदता है और हमारे बोलने, प्रेम करने और ज़िंदा रहने का ढंग बदल देता है।

मूल निवासी समुदाय सदियों की परंपराएँ ढोते हैं। औरतें उनकी नींव का पत्थर हैं: वे घर सँभालती हैं, बच्चों को पालती हैं, और समुदाय को जोड़े रखती हैं। लेकिन आवाज़ वे नहीं हैं। अक्सर उनके पास वह जगह ही नहीं होती कि जो सहती हैं, उसे कह सकें।

शहरों में—एंकरेज, फ़ेयरबैंक्स, जूनो—दुनिया तेज़ चलती है, लेकिन अकेलापन वैसा ही रहता है। औरतें काम, आज़ादी, भविष्य की तलाश में आती हैं। बहुत-सी उपनगरों में, तेल कंपनियों की शिफ़्टों में, बुरे रिश्तों में, संस्थाओं की चुप्पी में निगल ली जाती हैं।

अलास्का में जब कोई औरत गिरती है, तो उसकी आवाज़ कहीं नहीं पहुँचती। ठंड सब कुछ ढक लेती है। और जो गायब हो जाता है, वह गायब ही रहता है।

टैक्सी चलाने वाली औरत

हवाई अड्डे से होटल तक का सफ़र काफ़ी था। बर्फ़ीली सड़क पर पैतालीस मिनट, और चालीस साल की एक विधवा ने एक पल के लिए भी मुझसे बात करना बंद नहीं किया। अलास्का में हमेशा ऐसा ही होता है: लोग अकेले जीते हैं, लेकिन जब उन्हें कोई सुनने वाला मिलता है, तो ऐसे खुल जाते हैं जैसे यह उनका आखिरी दिन हो।

मैंने तय किया था कि उस पूरी यात्रा में मैं एक लेखक रहूँगा। कोई भूमिका नहीं, कोई कंपनी नहीं, कोई परीक्षण नहीं। मैं गुमनाम रहा, क्योंकि सच यह है कि मुझे भी ठीक से पता नहीं था कि मैं क्या ढूँढ़ रहा था। बस इतना जानता था कि कोई मुझे पैसे दे रहा था ताकि मैं वह समझूँ जो वे कह नहीं रहे थे। उसने वही आम सवाल शुरू किए: उम्र, काम, शादीशुदा हूँ या नहीं, बच्चे हैं या नहीं। मैंने बस इतना जवाब दिया, “मेरी सगाई हो चुकी है।”

वह ठहाका मारकर हँस पड़ी। और हँसी, अलास्का में, किसी औरत के भरोसे का पासपोर्ट है। उस पल मैं उसकी दुनिया के अंदर था।

हम होटल पहुँचे। उसने गाड़ी खड़ी की और मेरे सूटकेस के साथ मुझे कमरे तक छोड़ने का बहाना ढूँढ़ लिया। मैं तुरंत एक बात समझ गया: जब किसी औरत को कुछ चाहिए होता है, तो वह माँगती नहीं। ले लेती है।

यह पहला संकेत था कि मुझे सावधान रहना है। यह जोखिम नहीं था, यह सम्मान था: रात में अलास्का में अकेले गाड़ी चलाने वाली औरत चालीस की उम्र तक ज़िंदा नहीं बचती, जब तक उसने मर्दों को किसी और से बेहतर पढ़ना न सीख लिया हो।

हम दोस्त बने रहे। आज भी हम एक-दूसरे को लिखते हैं। वह सलाह माँगती है, और हर बार वही वाक्य दोहराती है:

“तुम्हारे पास सबकी समस्याओं का हल है, लेकिन तुम्हारी अपनी कोई समस्या नहीं है। तुम्हारे पास अवसर हैं।”

एक औरत जो ज़िंदा रहने के लिए जमा देने वाली ठंड में गाड़ी चलाती है। और जिसने दूसरों को कभी भी उससे ज़्यादा समझना बंद नहीं किया, जितना उन्होंने कभी उसे समझा।

सीमा पुलिस वाली औरत

सुबह मैं टहलने निकला। यात्रा में मैं हमेशा एक ही काम करता हूँ: अपने दस्तावेज़ और बटुआ होटल में छोड़ देता हूँ, साथ में सिर्फ़ होटल का बिज़नेस कार्ड रखता हूँ। यह सालों पुरानी आदत है। मैं घरों को, ठंड को, अलास्का की चुप्पी को देख रहा था कि बिना किसी चेतावनी के पुलिस की दो गाड़ियाँ आ

पहुँचीं। दो महिला अफ़सर तेज़ी से बाहर निकलीं, ट्रैफ़िक रोका, पीला टेप बिछाया, और एक इलाक़े को ऐसे घेर लिया जैसे अभी-अभी कोई क़त्ल हुआ हो।

मैं वहाँ खड़ा देखता रहा, लेकिन कुछ सेकंड बाद उनमें से एक ने मुझे वहीं रुकने का आदेश दिया। वे मुझसे गवाह के तौर पर पूछताछ करना चाहती थीं।

किस बात का गवाह?

मैंने कुछ नहीं देखा था। मैं बस टहलता हुआ एक आदमी था।

“मामला” यह था: एक कुत्ता दम घुटने से मर गया था। किसी ने उसे बिना पानी के हॉट डॉग खिला दिए थे। अलास्का में यह भी अपराध है।

उस पल मुझे लगा कि मैं किसी फ़िल्म के सेट पर आ गया हूँ। लेकिन यह असली था। यह अलास्का था। और मैं वहाँ था।

उन्होंने मुझे अपनी गाड़ी में बैठने में मदद की और दस्तावेज़ लेने के लिए होटल वापस ले गईं। दोनों में से एक अच्छी फ़्रेंच बोलती थी और उसी में मुझसे सवाल पूछने लगी।

कुत्ता मर चुका था। दोषी को ढूँढना था। मैं वहाँ था, तो मुझसे पूछताछ हो सकती थी।

मैंने कहा कि मुझे जानवरों से प्यार है। कि इटली में मेरे दो हैं। और उस अबूझ उत्तर अमेरिकी तर्क में, मुझे “संदिग्ध नहीं” मानने के लिए इतना काफ़ी था।

तनाव कम हुआ। औपचारिकताएँ भाप बनकर उड़ गईं। और रात के खाने का न्योता आया।

वर्दी से बाहर उस पुलिस वाली में ऐसी आग थी, जिसकी बर्फ़ के बीच कोई उम्मीद नहीं करता। मैक्सिकन या स्पेनिश औरतों के बारे में बनी धारणाएँ भूल जाइए: अलास्का की औरतें ज़िंदा रहने के लिए गर्म हैं, खेल के लिए नहीं।

खाना सादा था, सीधा, बिना दिखावे का। मेरे चुटकुलों पर वह ऐसे हँसी जैसे सालों से नहीं हँसी थी। यहाँ, इतनी दूर-दराज़ जगहों में, हँसी दुर्लभ चीज़ है।

आखिर में, हमने बिना वादों और बिना उम्मीदों के विदा ली। बस एक चीज़ बची रही, ठोस और तीखी:

चुप्पी।

वैसी, जो अलास्का में हर कहानी के बाद हमेशा आती है। और जो बर्फ़ से ज़्यादा भारी होती है।

विश्वविद्यालय वाली लड़की

मैंने होटल में पूछा था कि पुस्तकालय कहाँ है। मेरे लिए यह हमेशा एक आदर्श जगह रही है: अंदर चुप्पी, बाहर शब्द। एक ऐसी जगह जहाँ लोग शांति ओढ़ लेते हैं, और दरवाज़े से बाहर निकलते ही फिर से पहले जैसे हो जाते हैं।

मैंने एल्गा—सचिव—को तुरंत देख लिया। वह लाल फ्रेम वाला आधुनिक चश्मा पहनती थी। एक ऐसा ब्योरा जो उत्तर की किसी औरत पर अंदाज़, चरित्र और सहज कामुकता दिखाता है। मैंने उसे कॉफ़ी ब्रेक पर बुलाया। उसने दोबारा नहीं सोचा: पुस्तकालय पर ताला लगाया और हम निकल पड़े।

हम बस स्टॉप पहुँचे, लेकिन हमारी बस कुछ ही मिनट पहले जा चुकी थी। एक कॉल जो कभी लगी नहीं। एक छूटी हुई ट्रेन। उन छोटी दरारों में से एक, जो अवसर बन जाती हैं।

उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने मेरी बाँह ऐसे पकड़ी जैसे मुझे सालों से जानती हो और मुझे अपने घर ले गई। उसने अंग्रेज़ी चाय बनाई, बिस्कुट दिए—एक सादा, लगभग बचकाना स्वागत। मैं वह इतालवी था जो संयोग से वहाँ आ पहुँचा था, वह भविष्य का एक टुकड़ा ढूँढ़ती एक युवा विश्वविद्यालय छात्रा थी। उस छोटे, सलीके वाले बैठक-कमरे में मैं एक बात समझ गया: दयालुता, अलास्का में, एक छोटा-सा इशारा है। एक तुरंत किया गया काम। यह औपचारिकता नहीं है: यह ज़रूरत है।

वह पति ढूँढ़ रही थी। उसने कहा नहीं, लेकिन उसकी हर हरकत में यह साफ़ था। मैंने वही किया जो मुझे सच में आता है: उसे कुछ सलाह दी। उसका हाथ थामने वाला मैं नहीं था। मैं दुनिया में देने आया हूँ, लेने नहीं। और वह मेरा समय नहीं था।

तीन साल बाद मुझे एक ईमेल मिला। एक तस्वीर। वह, गोद में एक बच्चे के साथ। और एक ही वाक्य:

“मैंने उसे तुम्हारा नाम दिया है।

प्यार की वजह से नहीं। सम्मान की वजह से।”

एक ऐसे देश में जहाँ पाला सब कुछ ढक लेता है, कभी-कभी एक छोटा-सा इशारा ऐसी छाप छोड़ने के लिए काफ़ी होता है जो कभी नहीं पिघलती।

गृहिणी

मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी डाइट छोड़ रहा था। दिन में सिर्फ़ एक बार खाना यात्रा में ठीक था, लेकिन अलास्का जैसी जगह में नहीं, जहाँ ठंड बिना इजाज़त माँगे आपको खा जाती है। मैंने रेस्तराँ छोड़कर बाज़ार जाने का फ़ैसला किया। यह सबसे तर्कसंगत चुनाव था: अच्छा खाना और स्थानीय लोगों को बेहतर ढंग से देखना।

प्रांतीय सुपरमार्केट में आप सब कुछ समझ जाते हैं: लोग कैसे कपड़े पहनते हैं, कितना खर्च करते हैं, अपने बच्चों को कैसे देखते हैं, थकान से कैसे निपटते हैं। यह शहर की सबसे सच्ची शो-विंडो है।

मैंने इतालवी प्रोशुत्तो का एक पैकेट और थोड़ी भैंस की मोज़रेला उठाई—उस जमा देने वाली ठंड में एक दुर्लभ विलासिता—कि तभी भरी हुई एक शॉपिंग ट्रॉली मेरी बग़ल से टकराई। सहज रूप से मुझे लगा कि यह इत्फ़ाक़ है। लेकिन मेरे अनुभव में, औरतें कुछ भी “ग़लती से” नहीं करतीं। उन्हें हमेशा पता होता है कि वे कहाँ जा रही हैं।

उसने मुझे देखा और कहा, “प्रोशुत्तो और मोज़रेला... तुम इतालवी ही होगे?” उसने एक सेकंड में सब कुछ भाँप लिया था: राष्ट्रीयता, स्वाद, यहाँ तक कि खरीदारी की नफ़ासत भी।

उसका नाम रोज़ था, छप्पन साल की।

वह अपनी बेटी, दामाद और दो नाती-पोतों के साथ रहती थी। वे उसकी खुशी भी थे और उसका बोझ भी। वैसी औरत जो एक घर को डूबने नहीं देती और किसी का ध्यान नहीं जाता।

मैंने पास के एक कैफ़े में कॉफ़ी का सुझाव दिया। उसने बिना हिचक मान लिया। उसने अपनी ख़रीदारी पूरी की, उसे गाड़ी में रखा, और गाड़ी चलाकर मेरे पास लौट आई।

मेज़ पर बैठकर वह बोलने लगी। बहुत। मैंने सुना। मैंने टोका नहीं। कभी-कभी सबसे ताक़तवर शब्द वह चुप्पी होती है, जिसे आप दूसरे को इस्तेमाल करने देते हैं।

एक मोड़ पर वह मुस्कुराई और बोली: “इतालवी, प्यार, माँ, पिज़्ज़ा, स्पेगेटी...” धारणाओं पर बना वही पुराना वाक्य, लेकिन सच्ची कोमलता के साथ। मैंने सोचा कि क्या उसने मेरी कोई किताब पढ़ी है।

फिर उसने बताया: वह लेखिका थी। और उसने मेरा एक पाठ ख़रीदा था, जो एक छद्म नाम से छपा था। शुक्र है: उसने मुझे पहचाना नहीं था।

वह मुझे अपनी ज़िंदगी के बारे में बताती रही, भरा हुआ घर, एक जैसे दिन, यह डर कि नाती-पोतों को किसी चीज़ की कमी न हो, वह प्यार जो जताया नहीं जा सकता क्योंकि वह ज़ाहिर-सा लगता है।

जब वह आख़िरकार रुकी, तो उसने मेरी आँखों में देखा। वह उन नज़रों में से एक थी जो हज़ार शब्दों से ज़्यादा कहती हैं।

मैंने उससे बस इतना कहा: “मैं कल तुम्हारी किताब ख़रीदूँगा।” और फिर तुम्हें समीक्षा भेजूँगा।”

वह भावुक हो गई। उसकी आवाज़ हल्की-सी काँपी: “शुक्रिया। तुम नहीं जानते कि तुमसे मिलकर मुझे कैसा लगा। कितने शालीन, कितने विनम्र इंसान... क्या सारे इतालवी ऐसे ही होते हैं?”

मैंने वैसे ही जवाब दिया जैसे हमेशा देता हूँ: “हाथों और पैरों को देखो। वहीं से समझ आता है कि कोई इंसान असल में कहाँ से आया है।”

रोज़ मुस्कुराई। यह एक अदृश्य औरत की मुस्कान थी, जो एक दोपहर के लिए अदृश्य नहीं रही थी।

उपसंहार – अलास्का

अलास्का न आपका स्वागत करता है, न आपको ठुकराता है। वह आपको देखता है। आपको नापता है। आपको तब तक अधर में रखता है जब तक उसे पता न चल जाए कि आप एक और दिन रुकने लायक ईमानदार हैं या चले जाने लायक समझदार।

इस राज्य में दूरी भौगोलिक नहीं है: वह इंसानी है। लोग उन चुप्पियों में जीते हैं जो कुछ सेकंड की होती हैं, लेकिन यहाँ महीनों की बन जाती हैं। अकेलापन उनकी मातृभाषा है। और औरतें उसे सबसे अच्छा बोलती हैं। मैंने चार अलग-अलग भूमिकाओं में चार औरतें देखीं, और सबमें एक बात साझा थी: वे किसी का इंतज़ार नहीं कर रही थीं।

टैक्सी वाली रुकने से बचने के लिए गाड़ी चलाती थी। पुलिस वाली एक ऐसी दुनिया को क़ाबू में रखती थी जो क़ाबू में नहीं आ सकती थी। विश्वविद्यालय की छात्रा उस जगह में भविष्य ढूँढ़ रही थी जो वर्तमान छीन लेती थी। गृहिणी पूरा घर उठाए हुए थी, बिना किसी के उसे देखे।

अलास्का में औरतें माँगती नहीं। वे करती हैं।

यह एक ऐसी जगह है जहाँ ज़िंदगी छोटी है, रात लंबी है, और सच को दर्शकों की ज़रूरत नहीं।

चिंतन – अलास्का

अलास्का ने मुझे एक सीधी और तीखी बात सिखाई: दुनिया मर्दों और औरतों में नहीं बँटी है। वह उनमें बँटी है जो बोझ उठाते हैं और जो उसे दूसरों पर डालते हैं।

इस राज्य में बोझ वे उठाती हैं।

मैंने नाज़ुकपन नहीं देखा। मैंने गरिमा देखी। मैंने एक ऐसी शांति देखी जो सुकून से नहीं, तूफ़ान की आदत पड़ जाने से आती है। मैंने ऐसी औरतें देखीं जो शिकायत नहीं करतीं क्योंकि जानती हैं कि करें भी, तो कोई नहीं सुनेगा।

अलास्का की औरतें इसलिए अदृश्य नहीं हैं कि वे मौजूद नहीं। वे इसलिए अदृश्य हैं कि कोई उन्हें इतनी देर तक नहीं देखता कि सचमुच देख सके।

वे बिना समय की माँएँ हैं, बिना समय-सारिणी की कामगार, बिना दर्शकों की रखवाली करने वाली। वे समाज का वह हिस्सा हैं जो तालियाँ नहीं माँगता। और कभी नहीं माँगेगा।

अलास्का की औरतें अपने अनुभवों के बारे में बात नहीं करतीं। इसीलिए अब मैं कर रहा हूँ।

एरिज़ोना

एरिज़ोना रेगिस्तान में एक खुला घाव है। धूल, घाटियों और चुप्पियों का एक विस्तार, जो कोसती नहीं, फ़ैसला सुनाती हैं। यहाँ सूरज गर्म नहीं है। वह जलाता है। और रात ठंडी नहीं है। वह बाँटती है।

यह एक सीमावर्ती राज्य है, जहाँ हर सड़क पर कोई संदिग्ध चलता है। आप्रवासी, सीमा गश्ती एजेंट, मूल निवासी कबीले, पूर्व सैनिक, ट्रक ड्राइवर, अकेली औरतें, टूटे परिवार: सब एक बेरहम गर्मी में घुले-मिले।

शहर आधुनिक लगते हैं, लेकिन जैसे ही आप उनकी हद से बाहर निकलते हैं, सच महसूस होता है: एरिज़ोना रेगिस्तान है, उजड़ती आबादी, नशा, संस्कृतियों की टकराहट, आदिवासी जड़ें जो कभी नहीं मरतीं और एक ऐसा अकेलापन जिसका कोई क्षितिज नहीं।

और औरतें? यहाँ वे तूफ़ान की आँख में जीती हैं: सीमाओं और पहचान के बीच, ज़िंदा रहने और गर्व के बीच, हिंसा और आज़ादी के बीच।

एरिज़ोना की औरत कुछ भी हो सकती है: – मूल निवासी होपी या नवाहो– मैक्सिकन आप्रवासी– किसी भुतहा शहर की अकेली माँ– सीमा गश्ती अफ़सर– आरक्षित क्षेत्रों की नर्स– फ़्रीनिक्स की छात्रा जो भाग निकलने के सपने देखती है।

लेकिन हर भूमिका में एक ही बोझ है: बिना रुक पाए डटे रहना।

सीमा पुलिस वाली औरत, 38 साल

क्रानून के रखवालों से मुलाक़ात, दुनिया में कहीं भी, हमेशा उस समाज की परीक्षा होती है जिसमें आप खुद को पाते हैं। मैंने इसे हमेशा उस इलाक़े से,

उसके नियमों से, उसकी सीमाओं से, उसके भूतों से सीधा आमना-सामना माना है।

उस दोपहर मैंने आज़ाद और स्वतंत्र महसूस करने के लिए एक कार किराए पर ली थी। मुझे पक्का यक़ीन था कि सड़क मेरी है। लेकिन अमेरिका में सड़क कभी आपकी नहीं होती। उस पर आपका क़र्ज़ होता है।

मैं चार घंटे बिना रुके चलाता रहा। फिर पाँच। एरिज़ोना का रेगिस्तान बेरहम है: अंतहीन घाटियाँ, सिहरा देने वाली चुपियाँ, मील दर मील जो सब एक जैसे लगते हैं।

और फिर मैंने उसे देखा। बतियाँ चमकाती एक पुलिस कार। रुकने का आदेश।

एक औरत बाहर निकली। उसके नैन-नक्श साफ़ तौर पर मैक्सिकन थे, गहरी काली आँखें, पीछे बँधे काले बाल, लाल होंठ। गहरे रंग का रे-बैन, और एक ऐसा शरीर जो जैसे खुद रेगिस्तान से तराशा गया हो। बिना सोचे मैंने उससे कहा:

“क्या आप किसी सौंदर्य प्रतियोगिता से भाग आई हैं?”

उसने किसी को खुद को छूने नहीं दिया। “मज़ाक़ मत करो। काग़ज़ निकालो, वरना मैं तुम्हें गिरफ़्तार कर लूँगी।”

बेहद सजग। घातक। पेशेवर।

मैंने उसे सब कुछ थमा दिया। वही आम सवाल: मैं सीमा के इतने पास क्यों था, कहाँ से आ रहा था, घंटों से सीधी लाइन में क्यों गाड़ी चला रहा था। “मैं यह तो नहीं कह सकता कि मशरूम चुन रहा हूँ,” मैंने जवाब दिया। “मैं असली अमेरिका देखना चाहता हूँ, वह जो किताबों में नहीं मिलता।” उसने मुझे कार से बाहर निकलवाया। सब कुछ जाँचा। फिर मुझे परखा। “तुम्हारे पास शराब क्यों नहीं है? तुम सिगरेट क्यों नहीं पीते?” “मैं पूर्व रग्बी खिलाड़ी हूँ। मेरी बस एक ही लत बची है।” “खाना?” उसने कहा। “जो मुझे चाहिए, वह खाया नहीं जा सकता। उससे सिर्फ़ प्यार किया जा सकता है।” “कुत्ता?” वह हँसी। “नहीं।” वह सख़्त हो गई। उसे समझ आ गया कि मैं हद से आगे जा रहा था। यह ख़तरनाक ज़मीन थी: उसके पास ताक़त थी, अधिकार था, और एक ऐसा मिज़ाज भी जो इज़ाज़त नहीं माँगता। “क्या तुम जान सकते हो कि तुम किससे सिर्फ़ प्यार कर सकते हो?” उसने पूछा। “बिल्कुल। वह, जिससे सब कुछ शुरू हुआ, जिसने हमें

बनाया, जो हमें ज़िंदा रखती है, जो हमें आगे ले जाती है।" "कौन?" "औरत। क्या आप समझी नहीं?" उसने जवाब नहीं दिया। उसने मुझे दस्तावेज़ लौटा दिए। "वापस जाओ। यह तुम्हारा रास्ता नहीं है।" मैंने बात मान ली। यही सबसे समझदारी का काम था। फिर रात आई।

और दस बजे, मेरे होटल की लॉबी में, मैंने उसे अंदर आते देखा। सादे कपड़े। वही नज़र। वही ताक़त। एक औरत जिसे ठीक-ठीक पता था कि उसे क्या चाहिए।

वह पास आई। "क्या मैं एक ड्रिंक ले सकती हूँ?"

"नहीं," मैंने जवाब दिया। और उठ खड़ा हुआ।

उसने मेरी बाँह पकड़ ली। "तुम जा क्यों रहे हो?"

मैंने उसकी आँखों में देखा और सच कहा:

"ख़तरे से भागना कायरता नहीं है। यह समझदारी है।"

और मैं चला गया।

नवाहो औरत

उस सुबह मैं देर से उठा। बाद में मुझे कैपस में अतिथि वक्ता के तौर पर बोलना था। मैंने अपना काम का बैग उठाया, पार्किंग तक नीचे गया, और "कैपस" लिखी पहली बस में चढ़ गया। एक सीधी, बेवकूफ़ाना, मासूम ग़लती।

एक घंटे बाद भी मुझे कुछ जाना-पहचाना नहीं दिखा था। अलग सड़कें, अलग नज़ारे, और कोई उतर नहीं रहा था। फिर बस रुकी। रूट का आखिरी पड़ाव।

नवाहो आरक्षित क्षेत्र।

अगली बस अगले दिन जाती। न फ़ोन, न संपर्क, न सहकर्मियों को ख़बर करने का कोई तरीक़ा। मुझे अगले दिन पहुँचकर ग़लतफ़हमी समझानी पड़ती। ऐसा होता है। ज़िंदगी चेतावनी नहीं देती।

जैसे ही मैं आरक्षित क्षेत्र में घुसा, मुखिया ने मुझे ऐसे गले लगाया जैसे सालों बाद लौटा कोई रिश्तेदार हो। उसने मुझे अपनी पत्नी, बेटी और क़रीबी रिश्तेदारों से

मिलवाया। उन्होंने मुझे आसपास घुमाया, पीने को कुछ दिया, और यूँ ही कह दिया:

“आज दोपहर हम तुम्हारे लिए दावत दे रहे हैं।”

वे किसी और का इंतज़ार कर रहे थे। मैं संयोग से वहाँ आ पहुँचा था। या कभी-कभी क्रिस्मत ग़लती का भेस धरकर आती है। मैं मुस्कुराया। मैंने स्वीकार किया। मैंने फ़ैसला रेगिस्तान पर छोड़ दिया।

भैंसे का मांस। खून के केक। आलू मिर्चें और प्याज़। बेहिसाब बीयर और शराब। हर तरफ़ पारंपरिक पोशाकें। आग जल रही थी। धीमे ढोल। और मुखिया की बेटी मुझे सफ़ेद पंख वाली टोपी पहना रही थी।

वह सच्ची नवाहो थी। चुप। चौकस। सब कुछ देखने और कुछ न कहने की आदी। उन औरतों में से एक जो परंपरा, मेहनत, घर के उन ज़रूखों के बीच बड़ी होती हैं जिनकी कोई रिपोर्ट नहीं करता, और एक ऐसी पहचान के साथ जो कंक्रीट के नीचे भी नहीं मरती।

दावत देर रात तक चली। ऐसे दृश्य जो मैंने जॉन वेन की फ़िल्मों में देखे थे, लेकिन उलटें: वे हमलावर नहीं थे। वे बचे हुए लोग थे।

उन्होंने मुझे मुखिया के तंबू में भैंसों की खालों पर लिटाकर सुलाया। बिना कपड़ों के। एक प्राचीन रस्म। मैंने स्वीकार किया। मैं वहाँ उस दुनिया का विरोध करने नहीं आया था जिसने मेरा स्वागत किया था। थोड़ी देर बाद मुखिया की बेटी अंदर आई। उसी ढंग में। बिना शब्दों के। बस मौजूदगी।

फिर मुखिया और उसकी पत्नी आए, हर कोई अपनी खाल में, हर कोई अपनी जगह पर। उन्होंने अपनी बेटी को देखा। और मुझे देखा। खुश। शांत। जैसे सब कुछ अपनी सही जगह पर हो।

अगली सुबह मैंने शौचालय ढूँढ़ा। उसने सरकंडों के झुरमुट और एक नदी की ओर इशारा किया।

मैंने नदी में नहाने की कोशिश की, लेकिन पानी गँदला था और मछलियों से भरा था। मैं सरकंडों में चला गया। जगह ख़ाली लग रही थी।

मैं ग़लत था।

जैसे ही मैं बैठा, दो इंडियन हाथों में अखबार लिए बाहर निकले, जैसे यह दुनिया की सबसे आम बात हो। फिर तीसरा। फिर एक और।

पूरा गाँव एक ही सरकंडों के खेत में हगता था।

और मैं सोच रहा था कि मैं अकेला हूँ।

सभ्यता की ओर लौटने वाली बस छूटने ही वाली थी। मैं उसे छोड़ नहीं सकता था।

मुखिया की बेटी ने मुझे रोका। उसकी आँखों में संदेह था। “क्या मैं तुम्हें फिर देखूँगी?”

मैंने उसे अपना लैपटॉप दे दिया। संपर्क में रहने का एक ज़रिया। एक मौक़ा।

लेकिन वह संपर्क कभी नहीं आया।

क्योंकि इंडियनों की चुप्पी ग़ैरमौजूदगी नहीं है। वह इतिहास है। वह क़ानून है। वह स्मृति है जो किसी पुष्टि की तलाश नहीं करती।

भुतहा शहर की नर्स – 45 साल

मेरा थायरॉइड गड़बड़ करने लगा था। मैं खा नहीं रहा था, लेकिन वज़न बढ़ रहा था। एक क्लासिक मामला।

मैंने फ़ार्मैसी में कोशिश की: पर्चा नहीं, तो दवा नहीं। सुपरमार्केट में कोशिश की: बिना पर्चे वाले विकल्प नहीं। बस एक ही रास्ता बचा था: अस्पताल।

और वहीं मैं उससे मिला।

कोंचिता।

नर्स। पैंतालीस साल की। वह एरिज़ोना के उजड़े इलाक़ों में रहती थी, जहाँ गर्मी किसी शाप की तरह भारी होती है और रात ओवरडोज़, दूर की सायरनों और ख़ाली घरों से भरी होती है। भुतहा शहरों में लोग ज़िंदा रहते हुए भी ग़ायब हो जाते हैं।

उसने मुझे देखा। हर दिन वह हताश लोगों, नशेड़ियों, घायलों, टूटे परिवारों को देखती थी। मेरे जैसा कोई—विदेशी, सूट में, विनम्र, और यहाँ सिर्फ़ थायरॉइड की दवा के लिए—ज़रूरी समस्याओं की सूची में नहीं था।

फिर भी प्रक्रिया एक अलंघ्य दीवार थी। ओबामाकेयर सबको इलाज देता था, हाँ, लेकिन सिर्फ़ तब जब वे भर्ती हों।

मुझे भर्ती नहीं होना था। मुझे बस जीते रहना था।

मैंने ज़िद नहीं की। ज़रूरत नहीं थी। मैंने बस उसे बताया कि मैं पास के होटल में ठहरा हूँ। उसके पास अपना नाम छोड़ा: फर्दिनांदो। और कुछ नहीं।

मैं चला गया। उस रात, लगभग आधी रात को, होटल का फ़ोन बजा। रिसेप्शनिस्ट ने मुझसे पूछा कि क्या मैं एक महिला को ऊपर आने दूँ या खुद लॉबी में नीचे आना पसंद करूँगा।

मैंने नीचे जाना चुना।

कोचिता वहाँ थी। सादे कपड़ों में। बिना वर्दी, बिना भूमिका।

“क्या हम बात कर सकते हैं?” उसने पूछा। मैंने सिर हिलाया।

हम पास के एक पब में गए। आमने-सामने बैठे, उसने मेज़ के नीचे हाथ बढ़ाया और मुझे एक छोटा सफ़ेद लिफ़ाफ़ा थमाया। अंदर मेरी दवाइयाँ थीं। उसने उन्हें वैसे थमाया जैसे कोई नशेड़ियों को नशा थमाता है। उसी सावधानी, उसी जोखिम, उसी गोपनीयता के साथ।

मुझे समझ नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया। मैंने उससे कुछ नहीं माँगा था।

मुझे तब समझ आया जब वह बोली।

“बात दवा की नहीं है,” उसने कहा। “बात उस ढंग की है जिससे उसने चीज़ें माँगीं। तरीक़ा। तहज़ीब। अंदाज़।”

उसने मेरी आँखों में देखा। एक औरत जो अपने दिन चीखों, आपात स्थितियों, हिंसा और ग़रीबी के बीच बिताती है, उन्हें तुरंत पहचान लेती है जो लेना नहीं चाहते, बस जीना चाहते हैं।

“मैं यह सबके लिए नहीं करती,” उसने जोड़ा। और मैं यह जानता था।

अभावों से भरे एक रेगिस्तान के बीच, एक अदृश्य औरत ने वहाँ होने का फैसला किया था।

टक्सन की नौकरानी – 22 साल की आप्रवासी

दोपहर में मुझे कुछ मीठा खाने की तलब हुई। यह भूख नहीं थी, यह स्नेह की कमी थी, और मैं यह जानता था। सबसे आसान इलाज था किसी रेस्तराँ में बैठकर कुछ मीठा मँगाना।

वेट्रेस फ़ौरन आ गई। छोटी, दुबली, शरीर से नाजुक लेकिन चाल में फुर्तीली। वह स्कर्ट पहने स्पीडी गोंज़ालेस की बहन जैसी लगती थी: मेज़ों के बीच ऐसे फिसलती थी जैसे उसके टखनों में आग लगी हो।

“तुम्हारी उम्र क्या है?” मैंने उससे पूछा।

उसने नोटपैड की ओर देखा तक नहीं। उसने मुझे घूरा।

“तुम्हें क्या मतलब? खाओ, पैसे दो, और जाओ। और अगर मुझे परेशान किया, तो मैं पुलिस बुला लूँगी।”

बाईस किलो का शरीर। बीस टन का मिज़ाज। काँच के मर्तबान में ठुँसा शुद्ध डायनामाइट।

मालिक फ़ौरन बाहर आया, माफ़ी माँगते हुए। उसने सब देख लिया था। मैंने कुछ ग़लत नहीं किया था, लेकिन वह विश्लेषण करने वाली नहीं थी: वह प्रतिक्रिया करती थी।

उसने मुझे अपनी कहानी बताई। वह मैक्सिको से ख़ाली हाथ आई थी: न पैसा, न परिवार, न पक्के दस्तावेज़, न कोई निश्चितता। वह ज़िंदा रहने के लिए मेज़ों पर खाना परोसती थी और उस भविष्य की उम्मीद करती थी जो एरिज़ोना शायद ही कभी देता है।

उसे जल्दी थी। दुनिया की सारी जल्दी। और वही जल्दी उसकी सीमा थी।

मैंने क़लम और कागज़ माँगा। मैंने एक चिट्ठी लिखी। न रूमानियत, न भ्रम: बस सच। मैंने उसे मालिक के ज़रिए उसके लिए छोड़ दिया, जिसने वैसे ही सिर

हिलाया जैसे कोई सम्मान दिखाने वाले को सिर हिलाता है।

अगले दिन मैं उस जगह के पास से गुज़रा। मैं अंदर नहीं गया। बस देखना चाहता था।

अचानक मैंने पीछे तेज़ क़दमों की आहट सुनी। पीठ पर एक धौल।

मैं मुड़ा।

वही थी।

उतरा हुआ चेहरा, बेचैन आँखें, उखड़ी साँसें।

“मैं बाईस की हूँ,” उसने कहा।

“और तुम सोते कहाँ हो, भाड़ में जाओ? मैं पूरी रात तुम्हें ढूँढती रही। पुलिस तक को नहीं पता कि तुम कहाँ हो।”

मैंने उसे देखा। वह पिछली रात वाली ही लड़की थी, लेकिन बिना कवच के। एक ऐसी दुनिया में एक बच्ची, जो बड़ों को निगल जाती है।

मैंने उससे विदा ली। और चला गया। उदासीनता से नहीं। सम्मान से। क्योंकि कुछ नाज़ुकपन छुए नहीं जाने चाहिए: उन्हें जाने देना होता है।

उपसंहार – एरिज़ोना

एरिज़ोना कोई नज़ारा नहीं है: वह एक सरहद है। और सरहदें पार नहीं की जातीं। उनका सामना किया जाता है।

इस राज्य में गर्मी तापमान नहीं है: वह फ़ैसला है। रेगिस्तान जगह नहीं है: वह अकेलापन है। लोग जीते नहीं, वे डटे रहते हैं।

मैं चार औरतों से मिला और सबका एक ही शब्द था: ज़िंदा रहना। सीमा गश्ती वाली, दाँतों तक हथियारबंद लेकिन उतनी ही अकेली जितना वह रेगिस्तान जिसकी वह गश्त करती है। नवाहो औरत, एक बेरहम धरती और कभी न भरने वाली स्मृति की बेटी। भुतहा शहरों की नर्स, जो अनदेखे जीवन ठीक करती है और उन्हें बचाती है जिनके पास कुछ नहीं बचा। आप्रवासी वेट्रेस, बाईस साल का गुस्सा और नाज़ुकपन, खुद से बड़ी एक दुनिया से जंग में।

चार अलग रास्ते। अंदर वही रेगिस्तान।

एरिज़ोना में औरतें भविष्य का इंतज़ार नहीं करतीं: वे अपनी पूरी ताक़त से उसे ढूँढती हैं। और जब नहीं मिलता, तो चलती रहती हैं। क्योंकि रुकने का मतलब है ग़ायब हो जाना।

मर्द घाटियाँ देखने के लिए यह राज्य पार करते हैं। औरतें मौत से बचने के लिए इसे पार करती हैं। और यह चुपचाप करती हैं, बिना किसी से कुछ माँगे।

चिंतन – एरिज़ोना

रेगिस्तान आपको एक बात सिखाता है: अकेले कोई नहीं बचता।

फिर भी, एरिज़ोना की औरतें यही करती हैं। हर दिन। हर रात। एक दम घोंटने वाले मौसम में और एक ऐसे समाज में जो माँग करता है कि आप तब भी मज़बूत रहें जब आप नहीं रह सकते।

ये वे औरतें हैं जिनके पास शिकायत करने का समय नहीं है। सपने देखने का समय नहीं है। ग़लतियाँ करने का समय नहीं है।

और मैंने, एक बार फिर, वही किया जो हमेशा करता हूँ: मैं उनसे मिला, उन्हें देखा, सुना, और फिर उन्हें जाने दिया। क्योंकि सम्मान रोककर न रखने से भी आता है। एरिज़ोना ने मुझे याद दिलाया कि कुछ ज़िंदगियाँ समझे जाने की माँग नहीं करतीं: वे बस यह माँगती हैं कि उन्हें अनदेखा न किया जाए।

और मैं उन्हें अनदेखा नहीं करूँगा। कभी नहीं।

अर्कासस

अर्कासस पहाड़ियों, नदियों और चरमराते लकड़ी के घरों के बीच एक धीमा मोड़ है। यह एक ऐसा राज्य है जो शोर नहीं करता, क्योंकि शोर अनचाहा ध्यान खींचेगा। यहाँ सब कुछ हड्डियों तक नंगा है: खेतिहर मज़दूरी, भुला दी गई खदानें, अलग-थलग समुदाय, ऐसे मोहल्ले जहाँ ग़रीबी कोई दौर नहीं, विरासत है।

यह वह अमेरिका है जो नक्शे से बाहर जीता है। दौलत पश्चिम में है। आधुनिकता उत्तर में। बाक़ी यहाँ रह जाते हैं: वे जिनके पास कोई विकल्प नहीं था।

अर्कासिस की औरतें वे हैं जो बचे हुए को जोड़े रखती हैं: डगमगाते परिवार, ढहते घर, ग़ैरहाज़िर या काम से चूर पति। अर्कासिस की औरत जल्दी बड़ी होती है, जल्दी शादी करती है, और जल्दी बूढ़ी हो जाती है।

वह है: – पूरे समय की माँ – बिना प्रमाणपत्र की नर्स – कामचलाऊ मनोवैज्ञानिक – रसोइया, ड्राइवर, शिक्षिका – सुपरमार्केट में, खेतों में, सस्ते क्लीनिकों में कम वेतन वाली कामगार।

लेकिन बात यहीं ख़त्म नहीं होती। अर्कासिस का एक और पहलू भी है: कठोर, छिपा हुआ, ऐसी नौकरियों से बना जो ताक़त देती हैं लेकिन ज़िंदगियाँ छीन लेती हैं। वह यह भी है: – डाककर्मियों जो पूरे इलाक़े के राज़ जानती है – स्थानीय कंपनियों की मैनेजर, बिना बोनस या शोहरत के, सिर्फ़ तनाव के साथ – कर और राजस्व अधिकारी, जिससे डरते हैं पर जिसे अनदेखा करते हैं, कागज़ों और कम तनख़्वाह के नीचे कुचली – एफ़बीआई एजेंट जिसे सज़ा के तौर पर या हिफ़ाज़त के लिए यहाँ भेजा गया, चुप रहने को मजबूर – जल-संयंत्र की तकनीशियन, जो उस समुदाय को पानी पहुँचाती है जो उसका नाम तक नहीं जानता – एक दवा कंपनी की कामगार, जहाँ इलाज का वादा होता है पर थका देने वाली शिफ़्टें मिलती हैं

आस्था लंगर है। मेहनत रोज़ की है। अकेलापन सामान्य है।

यहाँ औरतें मुक्ति नहीं ढूँढ़ रहीं: वे राहत ढूँढ़ रही हैं। और अक्सर वह नहीं मिलती।

डाककर्मियों – 48 साल

अर्कासिस में डाकघर क्रस्बे के दिल में होता है। यह सिर्फ़ चिट्ठियों और पार्सलों के गुज़रने की जगह नहीं है: वहाँ गपशप, चेक, शिकायतें, धोखाधड़ियाँ और इक़बालिया बयान घूमते हैं।

वह उसे चलाए रखती है। वह सबके बारे में सब जानती है। लेकिन उसके बारे में कोई कुछ नहीं जानता।

मेरे लिए यह मेरी माँ के दफ़्तर लौटने जैसा था। डाकघर में पैंतीस साल, और कुछ तौर-तरीक़े फ़ौरन पहचान में आ जाते हैं: सख़्त पदानुक्रम, गिने-चुने लोगों पर भरोसा, पैसा हाथ बदलता है पर हमेशा निगरानी में। मैं पहले से जानता हुआ अंदर गया कि मुझे किस तरह का जवाब मिलेगा। अनुमान लगा पाना एक फ़ायदा है।

एक मज़ाक़ से ही 48 साल की निदेशक क्रिस ने मेरे लिए अपने दफ़्तर का दरवाज़ा खोला। उसने मुझसे फ़ौरन एक “विदेशी सलाहकार” की तरह बर्ताव किया, उस जिज्ञासा और अविश्वास के मेल के साथ जो उन औरतों में होता है जिन्हें किसी पर भरोसा न करने की आदत है, पर जो सब कुछ अकेले करते-करते थक चुकी हैं।

पहले उसने मुझे दिखाया कि वह क्या कर सकती है। फिर, ज़्यादा हिम्मत से, कि वह क्या चाहती है।

पहली दीवार पार होते ही, पैसे और उसके रोज़ के औज़ारों से संपर्क ने बाक़ी सब घोल दिया। वह बोलने लगी। प्रशासन से मुश्किल रिश्ते, करियर में रुकावटें, टूटे वादे, लगातार जाँचें, शून्य मान्यता।

“मुझे तेज़ और असरदार हल चाहिए,” उसने कहा।

मैंने उससे बस एक लैटिन वाक्य कहा, उकसावे के तौर पर फेंका हुआ: “Do ut des।” मैं तुम्हें देता हूँ ताकि तुम दो।

वह फ़ौरन समझ गई: “तुम जो चाहोगे, मैं सब दूँगी, अगर तुम मेरी मदद करो।”

तीन दिनों में मैंने जनरल मैनेजमेंट के लिए चिट्ठियों की एक शृंखला तैयार की। उसने उन्हें पढ़ा, उन पर प्रति-हस्ताक्षर किए, और भेज दिया। जल्द ही बुलावा आ गया।

उसने ज़ोर दिया कि मैं सलाहकार के तौर पर उसके साथ चलूँ। मैं मान गया। नतीजा साफ़ था: – अफ़सर से मैनेजर – तनख़्वाह में बढ़ोतरी – वही भूमिका – कहीं कम जाँचें।

वह खुशी से उछलती हुई दफ़्तर से निकली। यह एक समस्या थी जिसे वह कम से कम पाँच साल से ढो रही थी, और एक हफ़्ते में वह ग़ायब हो गई।

शाम को वह मुझे रात के खाने पर ले गई।

वह सलीके से सजी-धजी आई, उससे अलग जैसी मैंने उसे दफ़्तर में देखा था। साफ़ था कि किसी ने उसे तैयार होने में मदद की थी: सहकर्मियों ने, सहेलियों ने, उसकी बेटी ने। सबने उस बदलाव में हिस्सा लिया था, “उपेक्षित” से “दिखती हुई औरत” तक।

खाने के अंत में वह भुगतान करने काउंटर पर गई। वह बिना भुगतान किए लौट आई। मालिक ने उसे रोक दिया था: बिल पहले ही चुकाया जा चुका था।

मैंने पहले ही उसे चेता दिया था: “उससे एक पैसा मत लेना। यह मेरा हिसाब है।”

क्रिस मुस्कुराई। फिर उसने मुझसे चलने को कहा। “मैं तुम्हें घर ले चलती हूँ। मैं तुम्हें वह तोहफ़ा देना चाहती हूँ जिसके तुम हक़दार हो।”

मैं ठीक-ठीक जानता था कि उसके मन में क्या है। मैंने उससे कहा कि वह आगे चले, मैं थोड़ी देर में पहुँचता हूँ।

मैं, इसके उलट, हवाई अड्डे की ओर चल पड़ा। मैंने राज्य छोड़ दिया।

तीन दिन बाद मुझे उसका एक ईमेल मिला। उसने लिखा कि वह मेरे बर्ताव से निराश थी, लेकिन आभारी भी। उसे, उसके शब्दों में, “एक ख़ास आदमी मिला था जिसने मेरी ज़िंदगी बदलने के बदले कुछ नहीं चाहा।”

राह से भटकी एफ़बीआई एजेंट - 38 वर्ष

वाशिंगटन से आई है, बड़ी जाँचों, भारी-भरकम ब्रीफ़िंग और काँच से घिरे उन कमरों की आदी, जहाँ बैठे मर्द दूसरों की ज़िंदगियों का फ़ैसला करते हैं। अब वह अर्कासस के एक उपनगरीय थाने में है: सस्ते नशे, घरेलू हिंसा, ज़िद्दी चुप्पियाँ। उसकी ताक़त बेकार है। उसका अकेलापन नहीं।

मैं वहाँ दूतावास के लिए अपनी क्षमताएँ और अपनी कमज़ोरियाँ दर्ज कराने गया था। मानक प्रक्रिया। मैं उसके दफ़्तर में दाख़िल होता हूँ: मैरियन, 38 वर्ष, ज़बरदस्ती तबादला की गई एक संघीय एजेंट।

“हमें एक-दूसरे को नाम से बुलाना होगा, नांदो,” उसने तुरंत कहा। “बताओ: तुम्हारी कोई कमज़ोरी है?”

“हाँ। औरतें।”

वह अकड़ गई। “मतलब?”

«मैं उनकी मदद करता हूँ, हो सके तो उनसे प्यार करता हूँ... और उन्हें छोड़ देता हूँ।»

“क्यों?” उसने पूछा। “क्योंकि तुम लोग हमेशा उन्हीं दाँतों से चबाते हो, जबकि हमारे पास कहीं ज़्यादा हैं। यह व्यवहार की बात है: हर चीज़ थामी नहीं जा सकती, हर चीज़ रोकी नहीं जा सकती।” अब वह चाहती थी कि उसका विश्लेषण हो। “तो मेरे साथ भी करो। बताओ, मेरा तबादला यहाँ क्यों हुआ। दिखाओ, तुम्हें क्या दिखता है।”

तीन मिनट। इससे ज़्यादा नहीं। उसके टूट जाने के लिए इतना काफ़ी था।

उसकी समस्या सीधी थी: वह अपनी भावनाओं पर क़ाबू नहीं रख पाती थी। एफ़बीआई जैसी एजेंसी में यह एक अभिशाप है। यह तुम्हें कमज़ोर बनाता है, अविश्वसनीय बनाता है, वे तुमसे तुम्हारी जाँचें छीन लेते हैं और तुम्हें वहाँ भेज देते हैं जहाँ तुम कोई नुक़सान न कर सको।

मैंने उसे बता दिया। बिना किसी लाग-लपेट के।

पहले उसने इनकार किया। फिर एक पल सोचा। और फूट-फूटकर रो पड़ी। उसने मुझे ऐसे गले लगाया जैसे उस इंसान को लगाया जाता है जो सच कह रहा हो, जब और किसी में ऐसा करने की हिम्मत न हुई हो।

फिर उसने मेरी स्थिति प्रमाणित करने वाले कागज़ों पर दस्तख़त किए। काम तर्कसंगत था, पर उसके दस्तख़त भावुक थे।

बाहर निकलते हुए मैंने वाशिंगटन फ़ोन किया। तबादले की माँग की: “मुझे मियामी भेज दो। मैं यहाँ नहीं रह सकता। वहाँ मैं आज़ाद रहूँगा।”

छह महीने बाद भी मैरियन मुझसे संपर्क में थी। फ़ोन, ईमेल, मिलने के अनुरोध।

मैं उससे हमेशा एक ही बात कहता: “कोई भविष्य नहीं है। मैं पहले ही कहीं और हूँ।”

उसने हार नहीं मानी। वह एफ़बीआई में थी। और जब एफ़बीआई तुम्हें निशाना बनाती है, तो वह तुम्हें इतनी जल्दी नहीं छोड़ती।

दवा उद्योग की कर्मचारी – 55 वर्ष

वह एक ऐसे कारख़ाने में काम करती है जो पूरे देश के लिए दवाएँ बनाता है। एक कड़वी विडंबना: वह दूसरों का इलाज करती है, खुद को ज़हर देती है। भारी रसायन, कठिन पालियाँ, ऐसे मास्क जो सिर्फ़ आधी सुरक्षा देते हैं, ऐसी तनख़्वाह जो किसी चीज़ से नहीं बचाती।

उसका नाम कोई नहीं जानता। हर कोई वे गोलियाँ लेता है जो उसके हाथों से होकर गुज़रती हैं।

मेरा वहाँ जाना तय नहीं था। सब कुछ एक डिनर पर शुरू हुआ, कोविड के बाद, जब मैंने हँसते हुए कहा कि मैंने फ़ाइज़र की चार ख़ुराकें ली हैं, सब एक ही बैच की, और उस बैच में एक “वियाग्रा वेरिएंट” था जो स्थायी फ़ायदे की गारंटी देता था। एक मज़ाक़। मेरे ही मज़ाक़ों में से एक।

पर आस-पास की मेज़ों पर किसी ने सुन लिया। और ख़बर पूरे देश में फैल गई। फिर पूरी दुनिया में।

दवा कंपनी मुझसे मिलना चाहती थी। समझने के लिए। जाँचने के लिए। क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका में अच्छा सामाजिक शोर किसी शेयर का भाव दोगुना कर सकता है।

वे मुझे कारख़ाने के अंदर ले गए। जैसे ही मैं दाख़िल हुआ, 130 लोग खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे। मेरा चेहरा लाल हो गया था, और उन्हें यक़ीन था कि मैं “राज़” खोलने वाला हूँ।

मैंने सच कहा: “वह एक मज़ाक़ था।” उन्होंने यक़ीन नहीं किया।

मैनेजर्स, अधिकारियों और सचिवों ने मुझे घेर लिया: हर कोई एक ब्योरा चाहता था, एक पुष्टि, तकनीकी सच्चाई का एक इशारा।

पर एक मज़दूर औरत ने, 55 वर्ष की, रसायनों से बिगड़े हाथ, बरसों के अदृश्य काम से झुकी पीठ, मुझसे बात करने का समय माँगा। उन्होंने उसे मेरे साथ एक कमरे में भेज दिया। वह उदास अंदर आई। ख़ाली। थकी हुई।

हमने पैंतालीस मिनट बात की।

टीकों की नहीं। बैचों की नहीं। चमत्कारी ताक़त की नहीं।

हमने ज़िंदगी की बात की। उन नाकामियों की जिन्हें सामान्य बताकर चला दिया जाता है। उन सपनों की जो दफ़न कर दिए गए क्योंकि वहाँ किसी के पास उन्हें देखने की विलासिता नहीं है।

मैंने उससे बस एक सच कहा: “सपने देखना इलाज नहीं करता, पर बचा लेता है। और इसकी क़ीमत उस सबसे सस्ती दवा से भी कम है जो तुम बनाती हो।”

वह मुस्कराती हुई निकली। उसकी सहकर्मियों ने उसे ऐसे देखा जैसे उसे हर ज़हर का तोड़ मिल गया हो।

“उसने तुमसे क्या कहा?” उन्होंने उससे पूछा।

उसने जवाब नहीं दिया। और मैं कभी नहीं बताऊँगा।

वह दुनिया का सबसे सीधा राज़ था: शब्द, अगर तुम्हें उन्हें सही जगह रखना आता हो, वहाँ जगह खोल देते हैं जहाँ हवा नहीं थी।

और उसके लिए, उस दिन, बस साँस ले पाना काफ़ी था।

सलीकेदार चोर महिला – 30 वर्ष

वह आदत से चोरी नहीं करती। वह इसलिए चोरी करती है क्योंकि अर्कासस उन्हें माफ़ नहीं करता जो ख़ाली हाथ पैदा होते हैं।

वह पढ़ी-लिखी है, बुद्धिमान है, और डरा देने की हद तक प्रतिभाशाली है। वह मैनेजर बन सकती थी, प्रोफ़ेसर, सलाहकार। इसके बजाय वह एक साया बन गई है: घरों, चैटों, पहचानों, वादों और गँवाए मौक़ों के बीच घूमती रहती है।

मैं उससे ऑनलाइन मिला। स्काइप पर मदद का एक अनुरोध आया, एक साफ़-सुथरी प्रोफ़ाइल, एक नाम जो किसी कोड जैसा लगता था: Last A। उसे सुंदर कहना अपमान था। सुंदर कहना कम कहना था। चोर होना उसके स्वभाव में था। मूर्ख होना सामान्य था। सधे हुए मेकअप वाली एक पहेली।

उसने मुझसे मदद माँगी। मैंने दी।

एक साल के अंदर उसने \$14,000 जुटा लिए, सब उसकी बताई ज़रूरतों के लिए। कभी कोई मुलाकात नहीं। कभी कोई वीडियो कॉल नहीं। कभी कोई फ़ोन कॉल नहीं। बस डिजिटल चिट्ठियाँ, सोच-समझकर गढ़े गए अनुरोध, ऐसी आपात स्थितियाँ जो सच्ची लगती थीं।

वह अब तक की सबसे मीठी धोखाधड़ी थी जो मेरे साथ हुई।

आखिरकार मैंने उसे ढूँढने जाने का फ़ैसला किया। लिटल रॉक। बिल और हिलेरी क्लिंटन का शहर।

मैं उसकी माँ, रीटा से मिला। एक भली, उलझी हुई औरत जो अपनी बेटी को सच में जानती नहीं थी। मुझे देखकर वह ज़रा भी नहीं चौंकी; बल्कि उसने मुझसे और पैसे माँगे, उस सहजता से जैसे कोई साँस लेता है।

उसी पल मैंने सच देखा।

वह अकेली नहीं थी। वह घाना के एक गिरोह से जुड़ी थी। अपनी कमाई का 55% उन्हें लौटाती थी। मजबूरी की एक पेशेवर। सबने मुझसे पूछा कि मैं ऐसे गंदे खेल में कैसे फँस गया। कैसे यक़ीन कर लिया। पैसे दिए। डटा रहा। मान लिया।

पर जवाब सीधा था, और मेरे भीतर साफ़ था:

जो लोग मदद करने के लिए बने हैं, वे बुरा नहीं सोचते। वे सिर्फ़ वह भलाई देखते हैं जो वे कर सकते हैं, तब भी जब दुनिया उन्हें कुछ और दिखाती है।

उपसंहार – अर्कासिस

अर्कासिस कोई राज्य नहीं है: यह एक धीमा जाल है। गरीबी, चुप्पी, न्यूनतम काम और चुपचाप बुझती ज़िंदगियों का एक जाल। यहाँ जिन औरतों से मैं मिला, वे उद्धार नहीं माँग रही थीं। वे बस साँस लेने की एक जगह माँग रही थीं।

डाक कर्मचारी, देश के सारे राज़ों की रानी, बस अपना मूल्य वापस पाना चाहती थी। एफ़बीआई एजेंट, जो ऊँचाई से गिरी थी, अपराध से ज़्यादा खुद से लड़ रही थी। दवा उद्योग की कर्मचारी, गोलियों और रसायनों के बीच अदृश्य, थोड़ा-थोड़ा खुद को ज़हर देकर दुनिया को बचा रही थी। और सलीकेदार चोर... वह इस

राज्य का संपूर्ण प्रतीक थी: बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, पर उस रास्ते को चुनने के लिए मजबूर जो ज़िंदगी ने उस पर थोप दिया था।

अर्कासस ने मुझे एक सीधी बात दिखाई: यहाँ औरतें जैसे-तैसे जीवित रहती हैं। कुछ टिकी रहती हैं। कुछ भाग गईं। कुछ अँधेरे में फिसल जाती हैं क्योंकि रोशनी वहाँ कभी थी ही नहीं।

और वे सब, किसी न किसी तरह, अनुपस्थित रहती हैं। इसलिए नहीं कि वे हैं नहीं। बल्कि इसलिए कि उन्हें कोई देखता नहीं।

चिंतन - अर्कासस

इस राज्य में मैंने समझा कि गरीबी कोई आर्थिक स्थिति नहीं है। यह भावनात्मक, सांस्कृतिक और मानसिक स्थिति है। यह गहरा विश्वास है कि इंसान इससे ज़्यादा का हकदार नहीं। जो यहाँ पैदा होते हैं, उन्हें एक अलिखित नियति से लड़ना पड़ता है।

अर्कासस की औरत के पास भविष्य नहीं होता: वह उसे अपने नंगे हाथों से बनाती है। हर दिन। एक ऐसे समाज के भीतर जो अवसर की बात करता है पर बाँटता सिर्फ़ गुज़ारा है।

यहाँ मैंने एक बात साफ़ देखी:

महिलाएँ गिरती नहीं।

उन्हें गिरने दिया जाता है।

और असली पाप गरीबी नहीं है। असली पाप उनकी उदासीनता है जो देखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं।

मैं आगे नहीं बढ़ता। मैं देखता हूँ, सुनता हूँ, लिखता हूँ। और मैं इन कहानियों को इस धरती से बाहर लाता हूँ क्योंकि, अगर मैं ऐसा न करूँ, तो वे यहाँ की हर चीज़ की तरह दफ़न रह जाएँगी: चुप्पी, धूल और शर्म में।

कैलिफ़ोर्निया

कैलिफ़ोर्निया कोई राज्य नहीं है: यह एक सामूहिक भ्रम है।

जो इसे दूर से देखते हैं, उनके लिए यह धूप है, ताड़ के पेड़, सिनेमा, तकनीक, समंदर, अमेरिकी सपना। जो इसे नीचे से जीते हैं, उनके लिए यह एक लगातार दरार है: चरम दौलत, निपट गरीबी से कुछ ही मीटर दूर; खेतों में फ़सल कटाई के बगल में हाई-टेक काम; बंद पड़ी कोठियाँ और फुटपाथ पर प्लास्टिक के तंबू। यह वह जगह है जहाँ दुनिया संभावनाएँ ढूँढने आती है और पहले से लिखी हुई ऊँच-नीच पाती है।

औरतों के लिए कैलिफ़ोर्निया एक झूठा वादा है: – दिखावटी आज़ादी – घोषित अधिकार – दिखाए जाने वाले अवसर।

पर नियम हमेशा एक ही है: अगर तुम क़दम नहीं मिला पाती, तो तुम गायब हो जाती हो।

यहाँ की अनुपस्थितियाँ चुप्पियाँ नहीं हैं: वे शरीर हैं जिन्हें व्यवस्था बिना मुड़कर देखे पीछे छोड़ देती है।

सिलिकॉन वैली की महिला – 39 वर्ष

इसे “नवाचार की राजधानी” कहते हैं, पर सिलिकॉन वैली एक बंद जागीर है जहाँ सत्ता पुरुष की है, गोरी या एशियाई, इंजीनियरिंग पर टिकी, सनक की हद तक प्रतिस्पर्धी।

यहाँ औरतों का आधिकारिक तौर पर स्वागत है: – विविधता कार्यक्रम – कंपनी की आचार संहिताएँ – लैंगिक समानता पर पैनल – सालाना रिपोर्टों में मुस्कुराती तस्वीरें।

पर उन कमरों के अंदर जहाँ फ़ैसले होते हैं, दृश्य अलग है।

उसके पास दो डिग्रियाँ हैं, एक मास्टर्स, बेहतरीन अंग्रेज़ी और ऊँचे तकनीकी कौशल। वह डिजिटल उत्पादों, डेटा और प्लेटफ़ॉर्म पर काम करती है। उसके दिन ऐसी बैठकों में बीतते हैं जहाँ असली विचारों का फ़ैसला तीन लोग करते हैं: दो मेज़ पर, एक स्क्रीन पर।

उससे सॉफ़्ट स्किल्स, मध्यस्थता की क्षमता और सहानुभूति की माँग की जाती है। उसे समन्वय की भूमिका दी जाती है, कमान की नहीं। वे चाहते हैं कि वह मौजूद रहे, पर नायिका न बने।

इस व्यवस्था में मातृत्व एक लॉजिस्टिक गड़बड़ी है। सुविधाएँ हैं, छुट्टियाँ हैं, सहायता है, अंडाणु फ़्रीज़ कराने की सुविधा है, कंपनी का क्रेडिट है—पर हमेशा एक अनकही शर्त के साथ: तुम्हें धीमा नहीं पड़ना है।

अगर वह गर्भवती होती है, तो उसे एक संभावित समस्या माना जाता है। अगर नहीं होती, तो उसे “स्कर्ट पहना मर्द” माना जाता है, बाक़ी सबकी तरह बदला जा सकने वाला। दोनों ही सूरतों में वह एक औज़ार है: कभी केंद्र में नहीं।

शाम की बैठकें, “आपात” वीकेंड और एशिया या यूरोप के साथ देर रात की कॉलें तुम्हारी निजी ज़िंदगी का लिहाज़ नहीं करतीं। व्यवस्था पूरी उपलब्धता माँगती है।

जब वह ढह जाती है – बर्नआउट, बेचैनी, अनिद्रा, अर्थ का संकट – तो जवाब हमेशा एक ही होता है: – योग – माइंडफुलनेस – निजी थेरेपी।

कभी ढाँचे में बदलाव नहीं। कभी सत्ता का सच्चा पुनर्वितरण नहीं।

उसकी अनुपस्थिति शारीरिक नहीं है: वह प्रतीकात्मक है। वह हर प्रक्रिया में मौजूद है, पर अंतिम मान्यता में कभी नहीं।

तकनीक दुनिया को महिला सशक्तिकरण की कहानियाँ बेचती है। पर गहराई में औरतें अपवाद बनी रहती हैं जिन्हें सँभालना है, स्तंभ नहीं जिन्हें मान्यता देनी है।

सेंट्रल वैली की प्रवासी – 28 वर्ष

सेंट्रल वैली कैलिफ़ोर्निया का वह हिस्सा है जिसे पर्यटक नहीं देखते और जिसे फ़िल्में नहीं फ़िल्मातीं।

यह वह कृषि गलियारा है जो आधे देश का पेट भरता है: – फलों के खेत – सब्ज़ियाँ – बादाम – अंगूर के बाग़ – प्रसंस्करण उद्योग।

इस परिदृश्य में प्रवासी औरत इस श्रृंखला की अदृश्य चालक शक्ति है। वे मेक्सिको से आती हैं, मध्य अमेरिका से, ऐसे गरीब समुदायों से जिनके पास कोई असली विकल्प नहीं। कई के पास काग़ज़ नहीं हैं, कुछ के पास कमज़ोर काग़ज़ हैं, और सबकी हालत एक जैसी है: उनका अस्तित्व इस पर टिका है कि वे कोई परेशानी खड़ी न करें।

वह खेतों में, ग्रीनहाउसों में और पैकिंग फ़ैक्ट्रियों में काम करती है। थका देने वाली पालियाँ, झुकी पीठ, भीषण गर्मी, हवा में कीटनाशक, महीन और लगातार निगरानी। वह कम बोलती है, बहुत देखती है, सब कुछ सुनती है।

मज़दूरी कम है, अक्सर असली न्यूनतम से भी नीचे। ओवरटाइम हमेशा दर्ज नहीं होता। बीमारी की छुट्टी नहीं मिलती: जो काम पर नहीं आती, उसकी जगह कोई और ले लेता है।

हिंसा व्यापक है पर अक्सर दर्ज नहीं होती: – काम पर उत्पीड़न – यौन ब्लैकमेल – नौकरी जाने की धमकी – अधिकारियों को ख़बर कर देने की धमकी।

शिकायत करने का मतलब है सब कुछ खो देने का जोखिम। चुप रहने का मतलब है बच्चों के लिए घर कुछ ले जाते रहना।

उसकी अनुपस्थिति संस्थागत है: वह सार्वजनिक आँकड़ों में नहीं दिखती, उसका कोई प्रतिनिधित्व नहीं, वह उन चर्चाओं में शामिल नहीं होती जहाँ खेती के फ़ैसले होते हैं, और जब पारिस्थितिक बदलाव या टिकाऊ आपूर्ति श्रृंखलाओं की बात होती है तो उससे सलाह नहीं ली जाती।

वह वह औरत है जो पूरे देश का भोजन थामे हुए है, बिना आधिकारिक कहानी में किसी जगह के अधिकार के।

कैलिफ़ोर्निया खुद को "हरा" बताकर बेचता है, पर्यावरण, स्वास्थ्य और भविष्य की चिंता करने वाला। पर उसके कृषि-हृदय के खेतों में औरतें ऐसी हालात में काम करती हैं जो हर नारे को झुठला देते हैं।

छवि उद्योग की महिला – 32 वर्ष

हॉलीवुड, टीवी स्टूडियो, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, एजेंसियाँ, विज्ञापन, सोशल मीडिया। कैलिफ़ोर्निया ने छवि पर टिकी एक वैश्विक अर्थव्यवस्था खड़ी की है। इस मशीनरी के केंद्र में वह औरत है जिसे एक सतह की तरह इस्तेमाल किया जाता है।

अभिनेत्री, एक्स्ट्रा, मॉडल, इन्फ़्लुएंसर, पृष्ठभूमि का चेहरा। उसकी पहली कसौटी नैतिक, सांस्कृतिक या पेशेवर नहीं है: वह सौंदर्य की है।

“महिला भूमिकाओं” की तय श्रेणियाँ हैं: – विज्ञापनों के लिए जवान लड़की – पारिवारिक अभियानों के लिए “सामान्य” औरत – कुछ टारगेट के लिए अति-यौनीकृत शरीर – दूसरों के लिए भरोसा दिलाने वाली छवि।

कास्टिंग सिर्फ चयन नहीं है: यह एक सांस्कृतिक छलनी है। यह तय करती है कि कौन दिखाने लायक है, कौन बेचने लायक है, और किसे ठुकराया जा सकता है।

खुली और छिपी माँगें हमेशा एक जैसी होती हैं: – एक तय वज़न में समाना – मेकअप, टच-अप, बदलाव स्वीकार करना – घिसी-पिटी पटकथाओं में ढलना – पैसे देने वालों की बात न काटना।

जो कोई कुछ दृश्यों या हालात से इनकार करने की कोशिश करती है, उसे “मुश्किल” माना जाता है। जो दुर्व्यवहार या ब्लैकमेल की शिकायत करती हैं, उन्हें अलग-थलग कर दिया जाता है, ठप्पा लगा दिया जाता है, और अक्सर चुप्पी से बदल दिया जाता है।

बड़े वैश्विक अभियान बॉडी पॉज़िटिविटी, सम्मान, सशक्तिकरण और समावेश की बात करते हैं। पर दफ़्तरों के गलियारों में, कास्टिंग में और प्रोडक्शन की बैठकों में असली कसौटियाँ पुरानी, घिसी-पिटी और हिंसक बनी रहती हैं।

यहाँ औरत एक छवि के रूप में अति-दृश्य है और एक आज़ाद इंसान के रूप में अदृश्य।

उसकी अनुपस्थिति मनोवैज्ञानिक है: वह खुद से कटी हुई है, एक ब्रांड में बदल दी गई है, अपनी क्रीमत संख्याओं में नापने को मजबूर: व्यूज़, लाइक्स, फ़ॉलोअर्स, एंगेजमेंट।

होर्डिंग पर छपे हर संपूर्ण चेहरे के पीछे एक इंसान है जिसका अपनी छवि पर अक्सर लगभग कोई नियंत्रण नहीं होता।

बेघर महिला – 50 वर्ष

कैलिफ़ोर्निया में संयुक्त राज्य अमेरिका की सबसे बड़ी बेघर आबादियों में से एक भी है।

फ़्लार्डोवरो के नीचे तंबू, नहरों के किनारे जुगाडू डेरे, कारों में रहते लोग, जर्जर कैंपर, और रिहायशी गलियारों में बदल चुके फ़ुटपाथ। लॉस एंजेलिस, सैन

फ्रांसिस्को, ओकलैंड, सैन डिएगो: गरीबी हर जगह है, दिखती भी है और अनदेखी भी।

बेघर औरत दोहरी तरह से असुरक्षित है: – एक गरीब औरत के रूप में – एक कमज़ोर स्त्री-शरीर के रूप में।

अक्सर उसका अतीत होता है: – न चुकाए जा सकने वाले किराए – छूटी नौकरियाँ – तबाह करने वाले अलगाव – घरेलू हिंसा – बिना इलाज की बीमारियाँ – बेहोशी की दवा की तरह इस्तेमाल हुई लतें।

रात कभी आराम नहीं होती: वह बचाव होती है। थोड़ी-सी चीज़ों की रखवाली, एक स्लीपिंग बैग, एक थैला, एक दस्तावेज़, एक याद। सामाजिक सेवाएँ हैं, पर वे हैं: – धीमी – नाकाफ़ी – अफ़सरशाही से भरी – कभी-कभी अपमानजनक।

बेघर औरतें सटीक आँकड़ों से बाहर छूट जाती हैं: वे ही हैं जो जगह बदलती रहती हैं, हमलों से बचने के लिए ठिकाने बदलती हैं, डर के मारे आश्रयों में नहीं जातीं, अपने बच्चों को सेवाओं तक नहीं ले जातीं इस डर से कि उन्हें छीन लिया जाएगा।

उसकी अनुपस्थिति नैतिक है: समाज उसे देखता है पर उसे अपना हिस्सा नहीं मानता। उसे एक समस्या बताया जाता है, कभी राजनीतिक और आर्थिक फ़ैसलों का नतीजा नहीं।

कैलिफ़ोर्निया, जो डिजिटल समावेश, नवाचार और टिकाऊ भविष्य की बात करता है, उन औरतों के साथ रहता है जो सार्वजनिक फ़व्वारों में बाल धोती हैं, पार्किंग में कपड़े बदलती हैं, लंगर की बदौलत खाती हैं।

इनमें से कोई “अति का मामला” नहीं है। वे एक ऐसे मॉडल का सामान्य नतीजा हैं जो जीने की लागत न उठा पाने वालों के पतन को अनिवार्य मान लेता है।

उपसंहार – कैलिफ़ोर्निया

कैलिफ़ोर्निया दुनिया की शोकेस है और, साथ ही, उसका पिछवाड़े का कमरा।

बाहर से यह प्रदर्शित करता है: – तकनीक– सिनेमा– संगीत– विश्वविद्यालय– नवाचार

भीतर यह छिपाता है: – कृषि शोषण – आवास की असमानताएँ – चरम अनिश्चितता – लतें – ढाँचागत बेघरी। यहाँ औरतें अपनी कमी के कारण अनुपस्थित नहीं हैं। वे छवियों की भरमार के कारण अनुपस्थित हैं।

जब कोई जगह हर तरफ़ लगातार स्त्री-शरीर दिखाती है— स्क्रीन, होर्डिंग, वीडियो, विज्ञापन, सोशल मीडिया फ़ीड—तो वह दुनिया को यह भ्रम देती है कि औरतें केंद्र में हैं।

असल में: – तकनीक में काम करने वाली औरत बहुत कम चलाती है – खेलों की प्रवासी की कोई नहीं सुनता – छवि की पेशेवर पहले से बनी भूमिकाओं में दबा दी जाती है – बेघर औरत से नज़रें चुराई जाती हैं।

कैलिफ़ोर्निया साबित करता है कि अनुपस्थिति सिर्फ़ ख़ालीपन नहीं है: वह असली सत्ता के बिना अति-प्रतिनिधित्व भी हो सकती है।

यह वह राज्य है जहाँ औरतें हर जगह दिखती हैं पर उन्हें उससे कहीं कम पहचाना जाता है जितना दुनिया सोचती है।

चिंतन – कैलिफ़ोर्निया

अलास्का में अनुपस्थिति पाला है। अलाबामा में वह इतिहास है। एरिज़ोना में वह सरहद है। कैलिफ़ोर्निया में वह मेकअप है।

यहाँ औरतों की अनुपस्थिति ढकी जाती है: – प्रगतिशील नारों से – सही-सही विज्ञापन अभियानों से – समानता पर सम्मेलनों से – प्रेरक कहानियों से।

हम “समावेश” की बात करते हैं, पर सच्चा समावेश तीन ठोस पैमानों से नापा जाता है: – कौन फ़ैसला करता है – किसे ज़्यादा वेतन मिलता है – कौन ना कहने की हैसियत रखता है।

इन तीनों बिंदुओं पर कैलिफ़ोर्निया की औरतें – हर सामाजिक वर्ग में – अक्सर पीछे छूट जाती हैं:

– मैनेजर को तब तक बर्दाश्त किया जाता है जब तक वह पूरी सत्ता न माँगे – प्रवासी को तब तक रहने दिया जाता है जब तक वह बिना विरोध कड़ी मेहनत झेलती रहे – छवि की पेशेवर का तब तक इस्तेमाल होता है जब तक वह टारगेट

पर खरी उतरे – बेघर औरत को तब तक अनदेखा किया जाता है जब तक वह यातायात या शिष्टाचार में बाधा न बने

दुनिया भविष्य समझने के लिए कैलिफ़ोर्निया की ओर देखती है। पर अगर वह सच में उन औरतों को देखे जो इसे टिकाए हुए हैं, तो उसे एक सीधा सच मिलेगा:

उस जगह का कोई भविष्य नहीं जो सामान्य मान लेती है अनुपस्थिति

उनकी, जो उसे थामे हुए हैं।

इसीलिए कैलिफ़ोर्निया इस खंड में शामिल है। मिथक की तरह नहीं, पोस्टकार्ड की तरह नहीं, दुश्मन की तरह नहीं। सबूत की तरह।

कल्पना की दुनिया की राजधानियों में से एक, जहाँ सबसे मुश्किल से दिखने वाली चीज़ हमेशा वहीं रहती है: उन औरतों की असली ज़िंदगियाँ जो कभी स्क्रीन पर नहीं आतीं।

कोलोराडो

कोलोराडो एक ऐसा राज्य है जो सरल होने का दिखावा करता है पर है नहीं। यह वह अमेरिका है जो दो छोरों के बीच जीता है:

– पहाड़ जो सुरक्षा जैसे लगते हैं – शहर जो सामाजिक प्रयोगशालाओं की तरह काम करते हैं

यह एक साफ़, व्यवस्थित, ऊपर से प्रगतिशील इलाक़ा है, पर साफ़ दिखने वाले विरोधाभासों के साथ: बेहद महँगा जीवन-यापन, अदृश्य अलगाव, तकनीकी काम, घरेबंद बस्तियाँ और चुपचाप सामाजिक अकेलापन।

यहाँ औरतें खुली हिंसा के कारण गायब नहीं होतीं। वे ज़रूरत से ज़्यादा व्यवस्था, सांस्कृतिक दबाव और दम घोटने वाली सामाजिक अपेक्षाओं के कारण गायब होती हैं।

कोलोराडो एक ऐसा राज्य है जो बहुत माँगता है और बहुत कम लौटाता है। जो औरतें वहाँ रहती हैं, वे एक कठिन संतुलन साधती हैं:

– तकनीकी और मानसिक काम – पूरी मौजूदगी माँगने वाले परिवार – देखते और परखते समुदाय – मानसिक स्वास्थ्य जिसके लिए जगह नहीं – “जीवन की गुणवत्ता” के भेस में भौगोलिक अकेलापन।

यह वह राज्य है जहाँ तुम इसलिए नहीं गिरतीं कि कोई तुम्हें धक्का देता है। तुम इसलिए गिरती हो कि कोई तुम्हें फिसलते हुए नहीं देखता।

डेनवर की महिला – 35 वर्ष

डेनवर आधुनिक, व्यावहारिक और साफ़-सुथरा है। हर कोई तकनीक, स्टार्टअप और जीवन की गुणवत्ता की बात करता है। पर असल में यह एक ऐसा शहर है जो औरतों से बहुत माँगता है और बदले में असाधारण रूप से कम देता है।

वह एक पेशेवर है: – डिग्रियाँ – तकनीकी कौशल – स्थिर नौकरी – मध्यम-ऊँचा वेतन।

सब कुछ परफेक्ट है, कागज़ पर।

वह लगातार दबाव में जीती है: प्रदर्शन, लक्ष्य, बैठकें, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, हर हफ़्ते नापे जा सकने वाले नतीजे।

कंपनियाँ वर्क-लाइफ़ बैलेंस की बात करती हैं। पर लगातार उपलब्धता माँगती हैं।

उसके पास एक महँगा अपार्टमेंट है, भरा हुआ कार्यक्रम, और बारीकी से व्यवस्थित ज़िंदगी। वह गरीबी से नहीं गिर रही: वह थकान से गिर रही है।

उसकी अनुपस्थिति मानसिक है। वह हमेशा काम करती है, हमेशा सोचती है, सब कुछ जोड़े रखती है—जब तक कुछ टूट न जाए। और जब टूटता है, तो चुपचाप टूटता है।

पहाड़ों की उस्ताद – 42 वर्ष

डेनवर और बोल्डर के बाहर कोलोराडो का चेहरा बदल जाता है। पहाड़, छोटे समुदाय, ऐसे क़स्बे जहाँ सर्दियों में कम लोग रुकते हैं और गर्मियों में पर्यटक तस्वीरें खींचने उमड़ पड़ते हैं।

यहाँ शिक्षिका इलाक़े का स्तंभ है: – वह पढ़ाती है – वह राह दिखाती है – वह साथ देती है – वह सबको जानती है – वह मनोवैज्ञानिक सहारा है – वह बच्चों के लिए एक बड़ा परिवार है।

वह बर्फ़, अकेली सड़कों और छोटे स्कूलों के बीच जीती है। उसका काम बहुत भारी है, उसका वेतन सीमित।

उसकी अनुपस्थिति संस्थागत है: वह समुदाय को सँभालती है पर राजनीतिक फ़ैसलों में कभी शामिल नहीं होती। वह वह औरत है जो पूरे इलाक़े को बिना पहचाने टिकाए रखने के लिए काम करती है।

आदिवासी आरक्षित क्षेत्रों की महिला – 30 वर्ष

कोलोराडो का "अदृश्य" हिस्सा उसके आरक्षित क्षेत्र हैं। ऐसे इलाक़े जहाँ इतिहास आधुनिकता से ज़्यादा भारी पड़ता है।

आदिवासी औरतें तीन स्तरों का उत्पीड़न झेलती हैं: – ढाँचागत ग़रीबी – भीतर की पितृसत्तात्मक संस्कृति – बाहर से संस्थाओं की उपेक्षा।

वह अक्सर सामाजिक कार्यक्रमों, आदिवासी स्कूलों और बेहद कम साधनों वाले स्वास्थ्य केंद्रों में काम करती है। वह लत, अवसाद, घरेलू हिंसा और पूरी तरह अलग-थलग कर देने वाली भौगोलिक दूरी से जूझती है।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है: आधुनिक कोलोराडो उसे अपनी पहचान का हिस्सा नहीं मानता, और उसका समुदाय हमेशा खुद को नए सिरे से गढ़ने का उसका हक़ नहीं मानता। वह एक ऐसी औरत है जो पूरी क़ौम को थामे हुए है जबकि दुनिया उसे अनदेखा करती है।

स्की रिसॉर्ट की महिला – 27 वर्ष

ऐस्पन, वेल, ब्रेकेनरिज, टेलुराइड। विलासिता, पैसा, शीतकालीन खेल, मौसमी अर्थव्यवस्था।

जो औरत यहाँ काम करती है – वेट्रेस, बारटेंडर, लिफ़्ट ऑपरेटर, रिसेप्शनिस्ट, प्रशिक्षक – वह एक दोहरी दुनिया जीती है:

– बेहद अमीर पर्यटक – वे कामगार जो सब कुछ थामे रहते हैं

वह बिना तय घंटों के काम करती है, कम वेतन पर, और अक्सर अस्थायी तौर पर। किराया चुका पाने के लिए वह दूसरे कामगारों के साथ छोटे-छोटे कमरे साझा करती है।

वह दौलत से घिरी है, फिर भी अकेली रहती है। उसे घमंडी पर्यटकों, मौसमी मैनेजरों और लगातार माँगों से निपटना पड़ता है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: वह सबके लिए दौलत पैदा करती है पर खुद गरीब रहती है।

उपसंहार – कोलोराडो

कोलोराडो एक ऐसा राज्य है जो परफेक्ट लगता है, पर है नहीं। यह व्यवस्थित, समृद्ध, आधुनिक और सामाजिक रूप से संतुलित है—कागज़ पर। पर इसकी औरतें तीन दरारों पर जीती हैं:

– मानसिक दबाव – इलाक़ाई अकेलापन – संस्थागत अनुपस्थिति

कोई कांड नहीं, कोई बड़े पैमाने की हिंसा नहीं, कोई अफ़रा-तफ़री नहीं। और ठीक इसी वजह से उनकी अनुपस्थिति और भी भारी है।

यहाँ औरतें इसलिए नहीं गिरती कि कोई उन्हें धक्का देता है। वे इसलिए गिरती हैं कि हर कोई मान लेता है कि वे सँभाल लेंगी।

चिंतन – कोलोराडो

कोलोराडो की औरतों की ताक़त शोर मचाना नहीं है। और ख़बर बनना भी नहीं।

यह एक महीन, आधुनिक, समझदार अनुपस्थिति है। पहचानना कठिन, अनदेखा करना आसान।

कोलोराडो एक सीधी बात सिखाता है: अनुपस्थिति सिर्फ़ गरीबी, हिंसा, ठंड या क़ैद नहीं है। वह व्यवस्थित भी हो सकती है। वह खुशहाली भी हो सकती है। वह अपेक्षा भी हो सकती है।

जब कोई औरत अफ़रा-तफ़री से नहीं, बल्कि “सब ठीक चल रहा है” से दब जाती है, तब समस्या दिखती नहीं – पर असली होती है।

और इसीलिए कोलोराडो भी यहाँ है: यह याद दिलाने के लिए कि स्त्री की अनुपस्थिति का एक ही चेहरा नहीं होता। उसके पचास चेहरे हैं। हर राज्य के लिए एक।

कनेक्टिकट

कनेक्टिकट एक ऐसा राज्य है जिसकी कल्पना बहुत लोग करते हैं पर जिसे सच में कम लोग जानते हैं। बाहर से यह सुरुचिपूर्ण है: बेदाग कस्बे, साफ़ उपनगर, बेहतरीन स्कूल, महँगा पेट्रोल, सलीके के फुटपाथ, परफ़ेक्ट लॉन वाले घर। यह अमेरिका का "ऊँचा" पहलू है, वह जो कभी आवाज़ ऊँची नहीं करता, वह जो संगठित करता है, शासन करता है और प्रबंध करता है।

यहाँ सब कुछ संतुलन में लगता है, पर यह संतुलन स्वाभाविक नहीं है: यह एक लगातार दबाव है, शिष्टाचार, दिखावे और अपेक्षा का लगातार रख-रखाव।

कनेक्टिकट तुमसे चमकने को नहीं कहता। वह तुमसे कहता है कि कभी ग़लती मत करो।

यह एक ऐसा राज्य है जहाँ अच्छी तरह जिया जा सकता है, बशर्ते तीन बातें सच हों: – सामाजिक होड़ – भावनात्मक नियंत्रण – समुदायों का मौन फ़ैसला

यहाँ औरतें ग़रीबी या खुली हिंसा के कारण ग़ायब नहीं होतीं। वे ज़बरन ढलने के कारण ग़ायब होती हैं। एक शालीन ग़ायब होना: बिना चीख़-पुकार, बिना कांड, बिना ख़बर।

यह एक परिष्कृत अनुपस्थिति है, पर फिर भी अनुपस्थिति है।

बीमा दफ़्तर की महिला – 40 वर्ष

कनेक्टिकट संयुक्त राज्य अमेरिका की बीमा राजधानी है। हार्टफ़र्ड इसे हर जगह घोषित करता है: "Insurance Capital of the World।"

उन नारों के पीछे हज़ारों औरतें हैं जो कभी न ख़त्म होने वाली स्क्रीनों के सामने बैठी हैं: – शिकायतें – पॉलिसियाँ – जोखिम के एल्गोरिद्म – डिजिटल कागज़ी काम – प्रक्रियाएँ – मेट्रिक्स।

उनका काम सटीक, तकनीकी और बारीकी से नियंत्रित है। हर गलती कंपनी का पैसा और उनका समय खर्च करती है। हर फ़ैसले को उचित ठहराना, दर्ज करना, मंज़ूर कराना और प्रमाणित कराना पड़ता है।

दिन नियंत्रण की एक ज़ंजीर है।

वह सब कुछ जोड़े रखती है क्योंकि व्यवस्था उससे बेदाग़ होने की उम्मीद करती है। और वेतन अच्छा है: दूसरे देशों के मुक़ाबले बेहतरीन।

पर भावनात्मक क़ीमत बेहद ऊँची है।

यहाँ की औरतें ढहती नहीं। वे धीरे-धीरे ख़ाली होती जाती हैं, बिना कोई आवाज़ किए। क्योंकि इन दफ़्तरों में कोई नहीं पूछता कि तुम कैसी हो। वे बस पूछते हैं, “काम कैसा चल रहा है?”

उसकी अनुपस्थिति मानसिक है: हर दिन मौजूद, पर ख़ुद से कटी हुई।

अमीर उपनगरों की महिला – 45 वर्ष

कनेक्टिकट का अमीर हिस्सा एक अलग ही दुनिया है। विशाल घर, शांत एसयूवी, परफ़ेक्ट बगीचे, निजी स्कूल, पुराने सामाजिक नियम।

यहाँ औरतें हमेशा “बाहर” काम नहीं करतीं: वे सामाजिक व्यवस्था के भीतर काम करती हैं।

उसकी भूमिका सांस्कृतिक है: – बेदाग़ माँ – क़दम से क़दम मिलाती पत्नी – समितियों में मौजूदगी – घर का प्रबंध – तय समय पर स्वयंसेवा – परफ़ेक्ट छवि।

अगर वह टूट जाती है, तो कह नहीं सकती। अगर वह दुखी है, तो दिखा नहीं सकती। अगर वह अकेली है, तो किसी को पता नहीं चलना चाहिए।

उसकी अनुपस्थिति पहचान की है: वह उस भूमिका के पीछे गायब हो जाती है जिसे उसे निभाना है।

एक ऐसी जगह जहाँ “सब कुछ परफ़ेक्ट है,” वह कोई दरार दिखने देने की हैसियत नहीं रखती।

यह एक सुरुचिपूर्ण जेल है, पर फिर भी जेल है।

कुलीन विश्वविद्यालय की महिला - 34 वर्ष

न्यू हेवन में दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है: येल।

अकादमिक माहौल प्रगतिशील, आधुनिक और संवेदनशील दिखता है। पर सतह के नीचे कठोरता, तीखी होड़ और आसमान छूती अपेक्षाएँ हैं।

महिला शोधकर्ता एक विरोधाभास जीती है: – वह पढ़ी-लिखी है – वह सक्षम है – वह तैयार है – वह सांस्कृतिक उत्पादन के केंद्र में है।

पर व्यवस्था उसे कुचल भी देती है।

प्रकाशन, सम्मेलन, अनुदान, लेख, मार्गदर्शन, पढ़ाने का काम, भीतरी रिश्ते। एक लगातार मेहनत जो ज़िंदगी, मन और शरीर में समा जाती है।

महिला सहकर्मी अक्सर प्रतिद्वंद्वी होती हैं। पुरुष सहकर्मी अब भी पुरानी पीठों पर हावी हैं।

उसकी अनुपस्थिति संस्थागत है: जो ज्ञान वह पैदा करती है वह विश्वविद्यालय को थामे रखता है, पर उसका करियर ज़्यादा धीमे, ज़्यादा अनिश्चित, ज़्यादा अधर में आगे बढ़ता है।

कई टिकी रहती हैं। कई चली जाती हैं।

येल परफ़ेक्ट बना रहता है। वे नहीं।

मिश्रित मोहल्लों की महिला - 31

वर्ष

अमीर उपनगरों के बाहर और कुलीन विश्वविद्यालयों से दूर असली कनेक्टिकट है: कम वेतन, ऊँचे किराए, अस्थायी नौकरियाँ, मिश्रित समुदाय, और एक सामाजिक व्यवस्था जो हमेशा काम नहीं करती।

यहाँ औरतें छिपा हुआ स्तंभ हैं: वे सुपरमार्केट, सरकारी स्कूलों, सामुदायिक आवासों, कल्याण सेवाओं, छोटे कारोबारों और बुनियादी स्वास्थ्य सेवा में काम करती हैं। सब कुछ टिका रहता है: – कम वेतन वाली नौकरी – बच्चे – बड़ा परिवार – धीमा सार्वजनिक परिवहन – लगातार तनाव।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: वह बहुत काम करती है, कम कमाती है, और आगे नहीं बढ़ती।

और वह एक चौंकाने वाले विरोधाभास के भीतर जीती है: वह अमेरिका के सबसे अमीर राज्यों में से एक में रहती है, बिना खुद को उस दौलत का हिस्सा महसूस किए।

क्योंकि यहाँ दौलत निजी है, सामाजिक नहीं।

उपसंहार – कनेक्टिकट

कनेक्टिकट "सुरक्षित," "साफ़," "स्थिर" लगता है। और कुछ मायनों में है भी।

पर यह उन जगहों में से भी एक है जहाँ औरतें सबसे आसानी से, बिना आवाज़ के, गायब हो जाती हैं। हिंसा के कारण नहीं, भूख के कारण नहीं, ठंड के कारण नहीं। सामाजिक अपेक्षा के कारण।

यह एक चिकनी सतह वाली कमी है: न अफ़रा-तफ़री, न चीखें, न चौंकाने वाले आँकड़े। बस ऊँची माँगों और कम इनामों से कुचली ज़िंदगियाँ।

कोई ध्यान नहीं देता क्योंकि सब कुछ चल रहा है। और ठीक यही इसे खतरनाक बनाता है।

चिंतन – कनेक्टिकट

कई राज्यों में अनुपस्थिति साफ़ दिखती है। यहाँ वह शालीन है। विनम्र। "सामान्य।" कनेक्टिकट दिखाता है कि एक औरत के पास हो सकता है: एक घर, एक नौकरी, एक आमदनी, एक सुरक्षित मोहल्ला, एक प्रतिष्ठित समुदाय।

और साथ ही एक इंसान के रूप में पूरी तरह अदृश्य रहना।

सामाजिक पूर्णता एक पतला ब्लेड है। वह तुमसे मुस्कुराने को कहती है जबकि तुम्हारी जगह छीन लेती है।

कनेक्टिकट सिखाता है कि अनुपस्थिति बहुत ज़्यादा व्यवस्था, बहुत ज़्यादा शिष्टाचार, बहुत ज़्यादा नियंत्रण से भी पैदा हो सकती है।

और यह कि कोई समाज तब तक सच में उन्नत नहीं है जब तक वह औरतों को परफ़ेक्ट हुए बिना मौजूद रहने न दे।

डेलावेयर

डेलावेयर एक फिसलन भरा राज्य है। छोटा, शांत, और आर्थिक रूप से तंग। यह एक मामूली ब्योरा लगता है, पर यह अमेरिका के कामकाज का एक अहम हिस्सा है।

यहाँ न विशाल महानगर हैं, न रेगिस्तान, न पहाड़, न चकाचौंध भरे आईने। यहाँ एक छिपी अर्थव्यवस्था है, दबी-छिपी राजनीति, एक अफ़सरशाही जो चुपचाप अरबों इंधर-उधर करती है।

डेलावेयर वह जगह है जहाँ अमेरिका अपनी कंपनियाँ पंजीकृत कराता है, अपना पैसा रखता है और अपना हिसाब चुकता करता है। बीच की एक जगह: न बहुत अमीर, न बहुत गरीब, न बहुत शोर वाली।

यह एक परफ़ेक्ट धूसर इलाका है।

डेलावेयर में स्त्री की अनुपस्थिति फटती नहीं। वह भाप बनकर उड़ जाती है। धीमी, लगातार, आँकड़ों और सार्वजनिक चर्चा में अदृश्य। यहाँ औरतें गायब होती हैं मौन बोझ के कारण, इतनी छोटी नौकरियों के कारण कि उन पर ध्यान ही न जाए, ऐसी भूमिकाओं के कारण जो कभी राष्ट्रीय कहानी में दाखिल नहीं होतीं।

कॉर्पोरेट दफ़्तर की महिला – 38 वर्ष

डेलावेयर दस लाख से ज्यादा अमेरिकी कंपनियों का क़ानूनी घर है। यहाँ कंपनियों के दस्तावेज़, विलय, ट्रस्ट, स्वामित्व में बदलाव, कर दस्तावेज़ और अरबों के लेन-देन दर्ज होते हैं।

दुनिया सोचती है कि यह काम बड़े मैनेजर करते हैं। यह काम बिना खिड़की के केबिनो में बैठी औरतें करती हैं, दस्तावेज़ों की अंतहीन धाराएँ सँभालते हुए।

वह एक व्यवस्थित दफ़्तर में काम करती है, नियमों, प्रक्रियाओं और जाँचों से भरा। वह लगभग कभी ग़लती नहीं करती क्योंकि एक ग़लती की क़ीमत लाखों

हो सकती है। वह तेज़ है, सटीक है, और अदृश्य।

उसका दिन बना है: फ़ॉर्म, दस्तखत, प्रोटोकॉल, जाँचें, ईमेल, चेकलिस्ट।

उसका काम पूरी आर्थिक व्यवस्था को थामे हुए है। पर उसे कोई नहीं देखता। कोई नहीं पहचानता। कोई उसकी बात नहीं करता।

उसकी अनुपस्थिति ढाँचागत है: वह कागज़ का एक साम्राज्य टिकाए रखती है बिना कभी सत्ता की कहानियों में दिखे।

गोदाम और लॉजिस्टिक्स की महिला – 33 वर्ष

डेलावेयर सिर्फ़ अफ़सरशाही नहीं है। यह एक बंदरगाह भी है, माल की आवाजाही, भंडारण और आपूर्ति शृंखलाएँ।

यहाँ औरत काम करती है: – कोल्ड स्टोरेज गोदामों में– छँटाई केंद्रों में– औद्योगिक गोदामों में– खाद्य कंपनियों में– रात के समन्वय में। भारी पालियाँ, तेज़ रफ़्तार, झुकी पीठें, ठंडी हवा। दोहराई जाने वाली हरकतें, चोट का जोखिम, लगातार निगरानी।

उसका वेतन कम है। उसका अनुबंध अक्सर अस्थायी है। उसकी ज़िंदगी में कोई गुंजाइश नहीं।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: वह कड़ी मेहनत करती है, कम कमाती है, और कभी आगे नहीं बढ़ती।

यह वह औरत है जो व्यापार का छिपा हिस्सा थामे हुए है जबकि दुनिया सिर्फ़ बड़े शहरों की ओर देखती है।

प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा की महिला – 47 वर्ष

डेलावेयर के पास कोई विशाल स्वास्थ्य व्यवस्था नहीं है। उसके पास प्राथमिक देखभाल का एक न्यूनतम और बेहद नाजुक जाल है।

यहाँ औरत सँभालती है: – वृद्धाश्रम– छोटे क्लिनिक– सामुदायिक दवाख़ाने– घर पर देखभाल– अकेले बुजुर्गों का सहारा– भुला दिए गए पुराने मरीज़।

उसका काम भावनात्मक, शारीरिक और लगातार है। वह जितना सह सकती है उससे ज़्यादा पीड़ा देखती है। वह बिना मान्यता के अतिरिक्त घंटे काम करती है। वह जितनी हक़दार है उससे कम कमाती है।

उसकी अनुपस्थिति सामाजिक है: वह राज्य की जगह लेती है जहाँ राज्य नहीं पहुँच पाता, पर कोई उसे व्यवस्था का अनिवार्य हिस्सा नहीं मानता।

जब वह नहीं होती, सब कुछ बिखर जाता है। पर जब वह काम करती है, तो किसी का ध्यान नहीं जाता।

कम आमदनी वाले मोहल्ले की महिला – 29

वर्ष

डेलावेयर के भी नाजुक हिस्से हैं: गरीबी, घरेलू हिंसा, नशे और उपेक्षा से चिह्नित मोहल्ले। यहाँ औरतें एक साथ तीन समस्याओं का सामना करती हैं: अस्थायी रोज़गार, बढ़ती जीवन-लागत, और बहुत कम सामाजिक सुरक्षा।

वह कैशियर का काम करती है, सफ़ाईकर्मि का, मौसमी मज़दूर का, आया का, रसोई सहायक का। वह दूसरों के घर धोती है, साफ़ करती है, सँभालती है और सजाती है।

उसका दिन एक भागदौड़ है: बच्चे, बसें, पालियाँ, ख़रीदारी, घर, समस्याएँ।

उसकी अनुपस्थिति शहरी है: वह एक ऐसे शहर में रहती है जो पुनर्जन्म की बात करता है पर ठीक उन्हीं औरतों को पीछे छोड़ देता है जो सबसे बुरे वक़्त में उसे टिकाए रखती हैं।

उपसंहार – डेलावेयर

डेलावेयर में न कैलिफ़ोर्निया का नाटक है, न अलास्का की जमा देने वाली ठंड, न दक्षिण की कठोरता।

उसमें कुछ अलग है: अदृश्यता के एक रूप के तौर पर सामान्यता।

यहाँ औरतों का काम शोर नहीं करता क्योंकि वह है: – तकनीकी – दोहराव भरा – अनिवार्य – मौन – कहानी के लायक़ कम।

कभी कोई विस्फोट नहीं होता। बस लगातार घिसाव होता है।

औरतें सुखियाँ नहीं बनतीं। वे सामूहिक विरोध नहीं करतीं। वे जगह नहीं माँगतीं। वे बस सहती हैं।

और ठीक यही उन्हें अदृश्य बनाता है।

चिंतन – डेलावेयर

डेलावेयर दिखाता है कि स्त्री की अनुपस्थिति और भी कपटी रूप ले सकती है: चुप्पी का परफेक्ट प्रबंधन। यहाँ औरतें इनके पीछे की चालक शक्ति हैं: – अफ़सरशाही – समन्वय – बुनियादी स्वास्थ्य सेवा – न्यूनतम सेवाएँ। फिर भी, वे कभी अमेरिका की कहानियों में नहीं दिखतीं। अनुपस्थिति शोर नहीं है। वह पृष्ठभूमि है। और डेलावेयर इसका सबूत है: एक ऐसी जगह जहाँ देश हमेशा गुज़रता है, पर औरत हमेशा ठहरी रहती है।

फर्दिनांदो फ्रेगा